

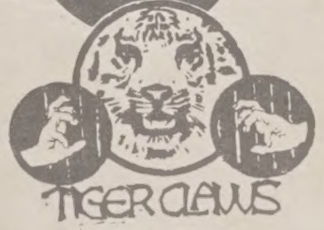
ट्टी अंक
दीवाना
तेज पाक्षिक, अंक-१० वर्ष-१९ १६-३१ मई १९८३
दीवानगी के
जेबकतरों
से सावधान
2.50
रुपये
TAPAS GUHA

GET THEM RIGHT AWAY FIGHTING-T-SHIRTS FROM SUN

They're here now, a great new line in T-Shirts from SUN, the magazine that has always given you action. This is our Martial Arts T-Shirts series and each design is a breath-taking, super-charged affair.
You can order these mind-stopping T-Shirts by post or collect them personally from the SUN office in New Delhi. Each T-Shirt is Rs. 25/- only and those who would like them by mail should add Rs. 5/- for postage (i.e. send us Rs. 30/-).
We have following combinations to offer in 34'' and 36'' size, round neck

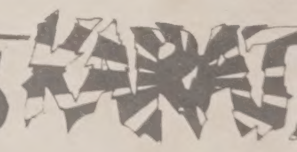
1


2


3


4


Design	Description	Cod
1 DRAGON	Black on Red Black on Yellow	D/BR D/BY
2 KUNG FU	Red on Yellow Black on Yellow Black on Blue Black on Red	KFU/ KFU/ KFU/ KFU/
3 TIGER CLAWS	Red on Yellow Black on Red Black on Blue Black on Yellow	TC/R TC/B TC/B TC/B
4 SIDE KICK	Black on Red Black on Yellow	KAR/ KAR/
5 KARATE	White on Dark Blue	K/WB

5


Write with your remittance to:

SUN MAIL ORDER DEPARTMENT
8-B BAHADURSHAH ZAFAR MARG NEW DELHI 110002.

NO VPP

Postal Orders/Demand Drafts to be drawn in favour of SUN PUBLICATIONS, and mailed t above address. Please indicate code number of the T-Shirt and the size you want when you o

प्यारे चन्द्रशेखरजी।

क्षमा कीजिए कि मुझे आपकी नयी गतिविधियों की रोशनी में आपके नाम एक प्रेमपत्र लिखने की आवश्यकता आन पड़ी।

मैं आप के अतीत और वर्तमान पर एक सरसरी निगाह दौड़ाने पर मजबूर हो गया।

मुझे वो जमाना याद है जब आपको राजनैतिक क्षेत्रों में 'यंग टर्क' कहा जाता था। आप के बारे में समझा जाता था कि आप प्रगतिशील विचारधारा रखते हैं। कांग्रेस और देश को समाजवाद के रास्ते पर डालकर तेजी के साथ उसे इस मंजिल पर पहुंचाना चाहते हैं।

लेकिन चचा गालिब के शब्दों में बात कुछ ऐसी हो गयी।

''आगे थे इब्तदाए इश्क में हम।
हो गये खाक इन्तहा यह है।''

समाजवाद के लक्ष्य की ओर बढ़ते-बढ़ते आपने उलटी छलांग जो लगायी तो जनसंघियों की गोद में जा गिरे।

''पहुंची वहीं पे खाक, यहां का खमीर था।''

इन साम्प्रदायिकों को गले लगा लिया।

'जब गले से मिल गये, सारा गिला जाता रहा।''

उनकी वकालत करने लगे, लेकिन आप नाजुक शाख पर बने हुए जनता पार्टी के घोंसले को बचा न सके। क्षमा कीजिए शब्द जरा सख्त हैं।'' चोर चोरी से चला जाये तो हेराफेरी से नहीं जाता।''

हालात ने आपका राजनीति का नशा हरण कर दिया, लेकिन नशा के बाद का खुमार जारी रहा। अब इसके अन्तर्गत आपने कन्याकुमारी से कश्मीर तक पद यात्रा शुरू कर रखी है। गोया आप गांधी जी और विनोबा भावे के पद चिन्हों पर चलने का प्रयास कर रहे हैं।

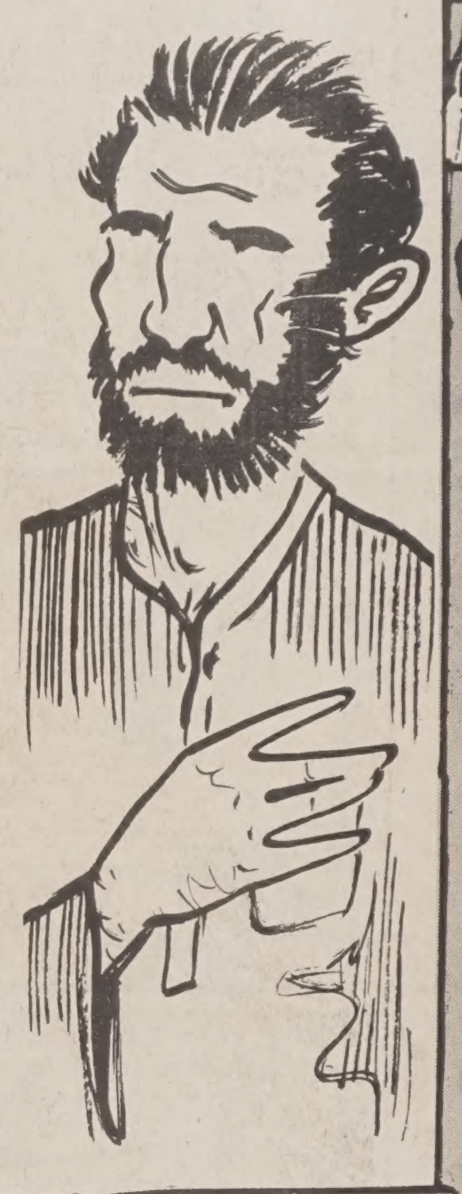
'लेकिन बात वो आन पड़ी है, कि बनाये न बने।''

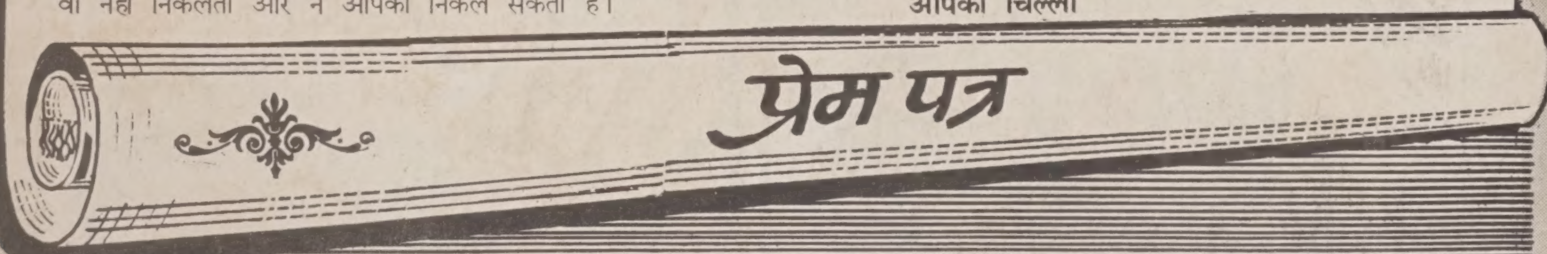
इस यात्रा के दौरान आप चन्दा इकट्ठा कर रहे हैं, यूं कह लीजिए कि आपने अपनी पदयात्रा को 'टूरिंग टाकीज' बना दिया है। पुन्य के साथ साथ फलियां भी हासिल कर रहे हैं।

मेरी बात तो छोड़िए आपकी पार्टी की तरफ से भी इस तरह धन एकत्र करने पर आलोचना हो रही है। गांधीजी और आचार्य विनोबा भावे की पदयात्रा पर ऐसी कोई आलोचना नहीं हुई थी, क्योंकि दोनों महात्मा थे। उन्हों ने कभी सत्ता की कुर्सी पर विराजमान होने की इच्छा नहीं की थी। आपकी बात दूसरी है, आपने कहा है कि मैं राजनीतिज्ञ हूं, इस लिए प्रधानमंत्री बनने की इच्छा को परवरिश करना कोई बुरी बात नहीं है। यह कह कर आपने अपनी पदयात्रा के मकसद को नंगा कर दिया है।

आपकी हालत मुझ से मिलती जुलती है मेरी जबरदस्त इच्छा है कि मेरी ५० लाख की लाटरी निकल आये, लेकिन वो नहीं निकलती और न आपकी निकल सकती है।

आपका चिल्ली





दीवाना

अंक : 10, वर्ष : 19, 16-31 मई 1983

सम्पादक • विश्वबन्धु गुप्ता
सह सम्पादिका • मंजुल गुप्ता
प्रोडक्शन सुपरवाईजर • राधे लाल शर्मा
कला निदेशक • सतीश गुप्ता
कलाकार • नेगी, कुलदीप मथारू, उत्तरा भालेराव
जनरल मैनेजर • रमेश गुप्ता

डिप्टी जनरल मैनेजर • वाई. ए. शेट्टी
मार्केटिंग मैनेजर • एम. आर. एस. मनी
प्रोडक्शन मैनेजर • विनोद अग्रवाल
विज्ञापन मैनेजर • जयप्रकाश गुप्ता
प्रकाशक • पन्नालाल जैन
मुद्रक • तेज प्रैस, नई दिल्ली
पता • दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
फोन. • २७३७३७, २७३६१७, २७३६०७

वार्षिक चन्दा ५० रुपये
अर्द्ध वार्षिक २६ रुपये
एक प्रति २.५० रुपये

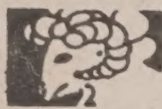
मुख पृष्ठ पर

दूसरों को जो अक्ल सिखाये
उससे खुद ही बचकर रहना
कट जाये गर जेब तुम्हारी
बाद में हमको कुछ मत कहना।
अक्सर लोग करते यह धंधा
जहां लिखा हो बोर्ड पर ऐसे
चिल्ली तुमको समझा रहा है
जेब साफ होती है कैसे ॥

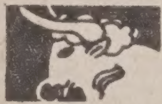

मेरा पेट छः दिन से खराब है, शाही हकीम की दवाओं का कुछ असर ही नहीं हो रहा है । मुझे तो यह हकीम बोगस नजर आता है ।
मैडीकल सर्टिफिकेट देने के लिए ठीक है ।
जाली एम.पी.पी.एस. की डिग्री लेकर शाही हकीम की नौकरी पर लग गया होगा और हमें इतने वर्षों से मूर्ख बनाता आ रहा है ।
बेचारे राजा का पेट ऐसे गड़गड़ा रहा है जैसे शाही नौबतखाने का नगाड़ा बज रहा हो ।
पिछली बार मेरे सिर में दर्द हुआ था ।
शाही हकीम ने जो चूर्ण दिया उससे सिरदर्द दूर होना तो दूर रहा । मुकुट में भी दर्द होने लगा ।
मैं यह जालसाजी अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता । खुद जाकर चैक करता हूं कि हकीम शाही हकीम खाने में बैठा क्या भाड़ झोंकता रहता है···
क्या पीस रहे हो ?
महाराज आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस नाचीज आपके शाही हकीम को एक नायाब दवा का नुस्खा हाथ लगा है । इस दवा की एक चुटकी फांकते ही जिस्म फूल की तरह हल्का हो जाता है ।
तुम्हारी ऐसी तैसी । मुझे तुम्हारी बोगस दवाओं का सब पता है । लो मैं तुम्हारे खरल में पड़ा सारा चूर्ण फांक लेता हूं । मुझे पता है कि कुछ भी नहीं होगा ।
महाराज, आपने यह क्या किया ? माना कि मैं एम.पी. पी. एस. में थर्ड डिवीजन में पास हुआ था । लेकिन कभी-कभी अंधे के हाथ में भी बटेर लग जाता है ।
ह हा!
बागी चन्दन सिंह शहर की दीवारों पर पोस्टर लगा रहा है कि हमारा राजा हल्के किस्म का आदमी है और प्रजा से आसमान की ओर देखने के लिए कह रहा है ।
कभी-कभी अंधे के हाथ में भी बटेर लग जाता है···हूंऽऽऽ

आपका भविष्य

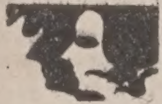
पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं. हंसराज शर्मा



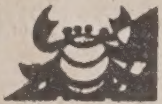
मेष : काम-धन्धों में सुधार एवं प्रगति मिलेगी, कुछ उतार-चढ़ाव भी देखने में आयेंगे लेकिन धन प्राप्ति आशानुसार होगी, परिबार की दशा संभलेगी, यात्रा में सुख मिलेगा।



वृष : इन दिनों अच्छे व बुरे मिले-जुले फल प्राप्त होते रहेंगे, हिस्सेदारों से झगड़ा या परेशानी, विशेष परिश्रम से ही लाभ हो सकेगा, धन की कमी से मन चिन्तित रहेगा।



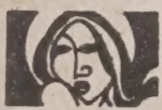
मिथुन : धन प्राप्ति होती रहेगी, घर-परिवार की दशा सुधरेगी, कोई बिगड़ा कार्य सुधरेगा, श्रेष्ठ फलों का संचार होने लगेगा, परन्तु पारिवारिक स्तर पर कोई गम्भीर मसला होगा।



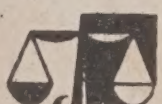
कर्क : किसी का भला करोगे वही बुरा मानेगा, लोकवाद से परेशानी, भाग्योन्नोति में बाधायें, सावधानी और सूझबूझ से काम करें वर्ना किसी भारी संकट में पड़ सकते हैं।



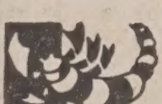
सिंह : रोग, शत्रु एवं बाधा उत्पन्न होकर दब जायेंगे, नए काम में हाथ डालने की न सोचें, हानि उठायेंगे लेकिन स्थाई काम-धन्धे लाभकारी रहेंगे, यात्रा की उम्मीद है।



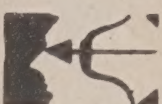
कन्या : इन दिनों कोई एक अप्रिय घटना या सूचना परेशान कर जायेगी, हालात ठीक ही चलेंगे लेकिन मेहनत और संघर्ष काफी करना पड़ेगा, भाग्य का सहारा।



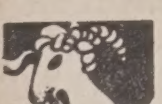
तुला : सप्ताह पहले से अच्छा है, अशुभ फलों में कमी का एहसास होगा लेकिन परिश्रम और संघर्ष का जोर बढ़ेगा, लाभ में वृद्धि, सुधार व रोजगार में नयापन लाने का विचार।



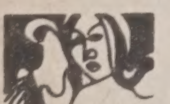
वृश्चिक : समय खास अच्छा नहीं, कानूनी कामों में उलझ सकते हैं, इसलिये सतर्कता से काम लेना चाहिये, धन लाभ होता रहेगा, यात्रा सावधानी से करें।



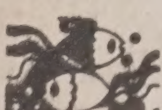
धनु : विगत दिनों की तुलना में यह समय अच्छा रहेगा, उत्साह बढ़ेगा, वातावरण में शांति और सुख साधनों में वृद्धि, धन-व्यय के साथ-साथ लाभ भी होता रहेगा।



मकर : संघर्ष एवं वाद-विवाद से बचें, हालात को सुधारने और लाभ की प्राप्ति हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ेगा, रुका पैसा मिलेगा या अधूरे कार्य बन जायेंगे।



कुम्भ : हालात में सुखद और शुभ परिवर्तन देखने को मिलेंगे, मन में उत्साह बढ़ेगा, कानूनी कामों में विजय पाने के लिए व्यय और भाग-दौड़ काफी करनी होगी।



मीन : सावधानी एवं धैर्य से काम करना अनिवार्य है वर्ना क्लेश या बीमारी का सामना, जल्दबाजी से बचें, सोच-विचार कर काम करने से लाभ होता रहेगा।

आपके पत्र

मैंने दीवाना के पिछले कुछ अंक देखे। दीवाना की उत्तम साज-सज्जा (गैटप) बहुत अच्छी लगी। इसमें सुन्दर व्यंग रचनायें पढ़ कर मुझे अपार खुशी महसूस हुई।

इकबाल अहमद (लाइजन आफीसर—बंगलौर)

दीवाना अंक 8 मिला तो दीवाने हो गये। मुख पृष्ठ देखते ही हंसी का फुव्वारा छूट गया। सभी स्तम्भ मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक लगे। सबसे अधिक प्रिय लल्लू जी और सिलबिल-पिलपिल लगे।

सुरेश मिश्रा—जयपुर

नई साज-सज्जा के साथ दीवाना का अप्रैल प्रथम अंक देखा तो बहुत खुशी हुई। 'आपका वजन-हमारा दीवाना पन' 'माचू-पीचू' (मूंछ का बाल) बेहद रोचक, हास्य से परिपूर्ण रहे। 'फैशन है जरूरी' आकर्षक है किन्तु फिल्म 'यह तो दीवाना हो गया' की पैरोडी बहुत हल्की रही। फिर भी इस अंक को देखकर लगा कि अगर दीवाना के स्तर में सुधार होता रहा तो बहुत ही जल्द दीवाना पुनः अपनी उसी प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेगा, जिसके कारण हर घर का हर सदस्य दीवाना का दीवाना रहता था। चिल्ली का प्रेम पत्र पुनः आकर्षक-पूर्ण बनाने की कोशिश करें। **संजय सक्सेना—नई दिल्ली**

जब-जब दीवाना घर में आता है। तो सभी का मन दीवाने की तरह हो जाता है। मूर्ख अंक प्राप्त हुआ जिसे पढ़ते-पढ़ते दीवाना हो गये। इसमें सफल विज्ञापन, असली फूलन देवी, माचू-पीचू मूंछ का बाल बहुत ही अच्छे लगे। **महेश कुमार माधवानी—सतना**

दीवाना का अंक 8 प्राप्त हुआ। सभी कहानियां व स्थाई स्तम्भ मनभाए, 'माचू-पीचू' व 'सड़क पर एक पत्थर' चित्रकथायें पढ़ कर दिल खुश हो गया। 'खेल-खेल में' दी गयी जानकारी ज्ञानवर्द्धक थी। 'दीवाने बैनिफिट मैच' पढ़कर पेट में मरोड़े उठने लगीं। दीवाना में चाचा बातूनी की कमी अखरती है। **राहुल गोदीका—तिलक नगर, जयपुर**

अरे वाह साहब, ये तो वास्तव में ही कमाल हो गया जो दीवना का दीवानगी से युक्त 'मूर्ख अंक' हाथों में आया। सच सम्पादक जी अब आपको हम दीवानों का थोड़ा ख्याल आ गया लगता है। इस अंक में फिल्म पैरोडी, चिल्ली लीला, आपका वजन, फैशन है जरूरी फीचर तो बस ! क्या कहूं, पर नया फीचर माचू-पीचू कुछ खास नहीं जमता और पृष्ठ भी ज्यादा घेरता है सो जरा सोचिए ! हां, इस अंक की छपाई तथा कागज बहुत सुन्दर है, अतः बधाई स्वीकारें। आशा है दीवाना का यह रूप-रंग इसी प्रकार बना रहेगा।

रमेश ए. एफ. —पानागढ़ (प. बंगाल)

दीवाना अंक 8 मिला। बड़े ही चाव लगाव से पढ़ा। काका जी के उत्तर एकदम सटीके थे। राजाजी, लल्लू, मदहोश और बन्द करो बकवास बेहद पसन्द आये। माचू-पीचू की चित्रकथा काफी रोचक लगी। सिलबिल-पिलपिल ने भी बहुत प्रभावित किया। गरीब चंद जी से अपने प्रश्न का उत्तर पाकर बेहद प्रसन्नता हुयी। क्यों और कैसे ज्ञानवर्द्धक लगा। अन्य सामग्री भी रोचक थी।

नवनीत तलवार—जयपुर

दिनेश कुमार चिटकारा—फरीदाबाद



मुझे यकीन नहीं आता कि तुम्हारे मां-बाप ने तुम्हारा नाम लल्लू रखा होगा। उन्होंने तो अच्छा सा नाम रखा होगा। लल्लू नाम कैसे पड़ा ?
यह भी एक अजब कहानी है।
एक दिन मैं सड़क पर अपने ही ख्यालों में खोया चला जा रहा था। मेरे दिमाग में अजीब-अजीब ख्याल आ-जा रहे थे कि अगर तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो क्या होगा ? क्या सचमुच यह दुनिया खत्म हो जायेगी वगैरह-वगैरह। आस-पास की घटनाओं से मैं बेखबर था।
संयोग वश दूसरी ओर से एक कुख्यात डाकू बैंक लूटकर भागा आ रहा था उसके पास बोरी थी जिसमें बैंक से लूटे हुए पैसे भरे हुए थे।
भारत बैंक
पुलिस उसके पीछे पड़ी थी। वह भागते-भागते मुड़कर पीछे देखता आ रहा था, उधर दूसरी ओर मैं ख्यालों में डूबा जा रहा था। हम दोनों में जोर की टक्कर हुई।
हम दोनों चारों खाने चित्त जा गिरे। मेरा सिर चकरा गया, याददास्त खो बैठा।
मैं कौन हूं, मेरा नाम क्या है ?
सत्यानाश हो तेरा।
मेरा बना बनाया खेल बिगाड़ दिया··· लल्लू कहीं का।
एक कुख्यात डाकू को रंगे हाथ पकड़ने में हमारी मदद कर आपने आदर्श नागरिक का फर्ज अदा किया है। आपका शुभ नाम क्या है ?
मेरा नाम ? लल्लू कहीं का···
क्या नाम बताया इन्होंने अपना ?
मेरा ख्याल है इन्होंने कहा···लल्लू किंका।
मिस्टर लल्लू किंका ?
मिस्टर लल्लू किंका पुलिस विभाग आपकी आभारी है और मैं विभाग की ओर से आपका धन्यवाद करता हूं।
ओह !
लेकिन तुम्हारे मां-बाप को तो असली नाम का पता होगा।
लल्लू
मेरे मां-बाप दोनों ही लल्लू हैं। डैडी फिलासफी के प्रोफेसर हैं उन्हें कुछ याद नहीं रहता। मां भुलक्कड़ हैं। दोनों रोज सुबह मेरा नाम पूछते हैं। बस मैं लल्लू किंका ही रह गया।



रंगारंग शुरुआत....
Colink OIL PASTELS
ARTMASTER
कॉलिंक
के पोस्टर कलर्स
वाटर कलर्स
और आयल पेस्टलस
— होनहार बच्चों के लिए शानदार
निर्माता :
कोलिंक इंडस्ट्रीज
नई दिल्ली-110015
ADVEL-CI-132

मूवी मसाला

सारिका और मेढ़क

लगता है सारिका अपने, जूतों के ज्यादा बड़ी होती जा रही है क्योंकि उस दिन उसने अपनी हिट फिल्म 'गीत गाता चल' के हीरो सचिन को मेढ़क कहा था।

क्या उसका ख्याल है दिलीप कुमार जैसे ऊंचें अभिनेता के साथ 'विधाता' में किए एक आध नग्न और अर्द्धनग्न सीन 'उसे' उसकी ऊंचाई पर पहुंचा देंगे ?'

मुझे याद है पहली बार कुणाल मुझे एटलंस अपार्टमेन्ट्स के पास मिला था ज़हां वह रहता है। मैंने उससे फोटोग्राफी सेशन के लिये समय लिया हुआ था। वह मुझे अपने कमरे में ले गया, वहां गरम काफी का प्याला पिलाया और फिर मुझसे उस दिन फोटो सेशन न कर सकने के लिये माफी मांगी।

अगले दिन हमने मिलकर बहुत-सी तस्वीरें खीचीं, फिर हम साथ ही बांदरा गये, सिगनल पर कार खड़ी होने पर लड़कियां उसे देख कहतीं, 'वो देखो शशि का बेटा जा रहा है,' वह मुस्करा कर उनकी ओर हाथ हिलाता था।

कुणाल को अपने लन्दन के दिन भी याद हैं उसका कहना है वह एक मस्त किस्म का लड़का है वह लन्दन में मौज कर रहा था हर किस्म के काम करके। यहां तक कि जीविका के लिए मैंने टैक्सी भी चलाई है। तब अचानक एक दिन मुझे इस्माईल शरीफ का तार मिला कि मैं उनकी फिल्म 'आहिस्ता-आहिस्ता' में काम करूं। बस अगली फ्लाईट पकड़ मैं बंबई आ पहुंचा। हालांकि 'आहिस्ता,आहिस्ता' अधिक सफल नहीं रही फिर भी कुणाल उसकी बात बड़ेही संतोषपूर्वक करता रहा। शरीफ ने ही इन्हें दूसरी फिल्म में काम करने का भी आमन्त्रण दिया—'वे बिल्कुल उनके पिता जैसे हैं, हम मित्र बन गए हैं। हमें खुशी है कुणाल अपने पिता के समान ही सफल उच्च अभिनेता के पुत्र के समान व्यवहार नहीं करते।

एक दिन मैंने उसे बिना पूर्व सूचना के ही



उनके घर में जा पकड़ा। कुणाल एक काली टी-शर्ट और जीन्स पहने ड्राईगरूम में आराम कर रहे थे। मैंने पूछा आज का क्या प्रोग्राम है ? 'कुणाल ने कहा उसे स्वयं ही मालूम नहीं तब वे उठकर चल दिए, मैं भी कैमरा लटकाये सीधे हो लिया। मैंने कहा कुछ रंगीन कमीजें खरीद लो—वह बोला, 'मेरी सब कमीजें फीकी हैं। मैं सब कोलबा पटरी से खरीदता हूं वे बहुत ही सस्ती हैं, सिर्फ 12 रुपये की एक।'

कुनु खरीददारी के मूड में है हम कोलबा के निकट स्थानों पर जाते हैं वह कुछ कमीजें खरीदता है। काउंटर पर खड़ी स्त्री बहुत खुश होती है। वह हमें ठंडा पिलाती है, हम एक कमीज खरीद चल देते हैं।

आज कुणाल की शूटिंग नहीं हैं हम दोनों दर्जी की दुकान पर पहुंचते हैं। दर्जी कुणाल को देख बहुत ही प्रसन्न होता है। फिर कुणाल जूतों की दुकानों पर जा एक जूता पसन्द कर लेता है। फिर कुछ देर और घूम-फिर कर हम दोनों ओबराय में खाना खाते हैं।

कुणाल की फिल्म 'विजेता' रिलीज हो गई और जिस जिसने वह फिल्म देखी है कुणाल के अभिनय से अत्यन्त प्रभावित हुआ है। इसमें शक न था कि अब कुणाल को एक अच्छे अभिनेता माना जाने लगेगा।

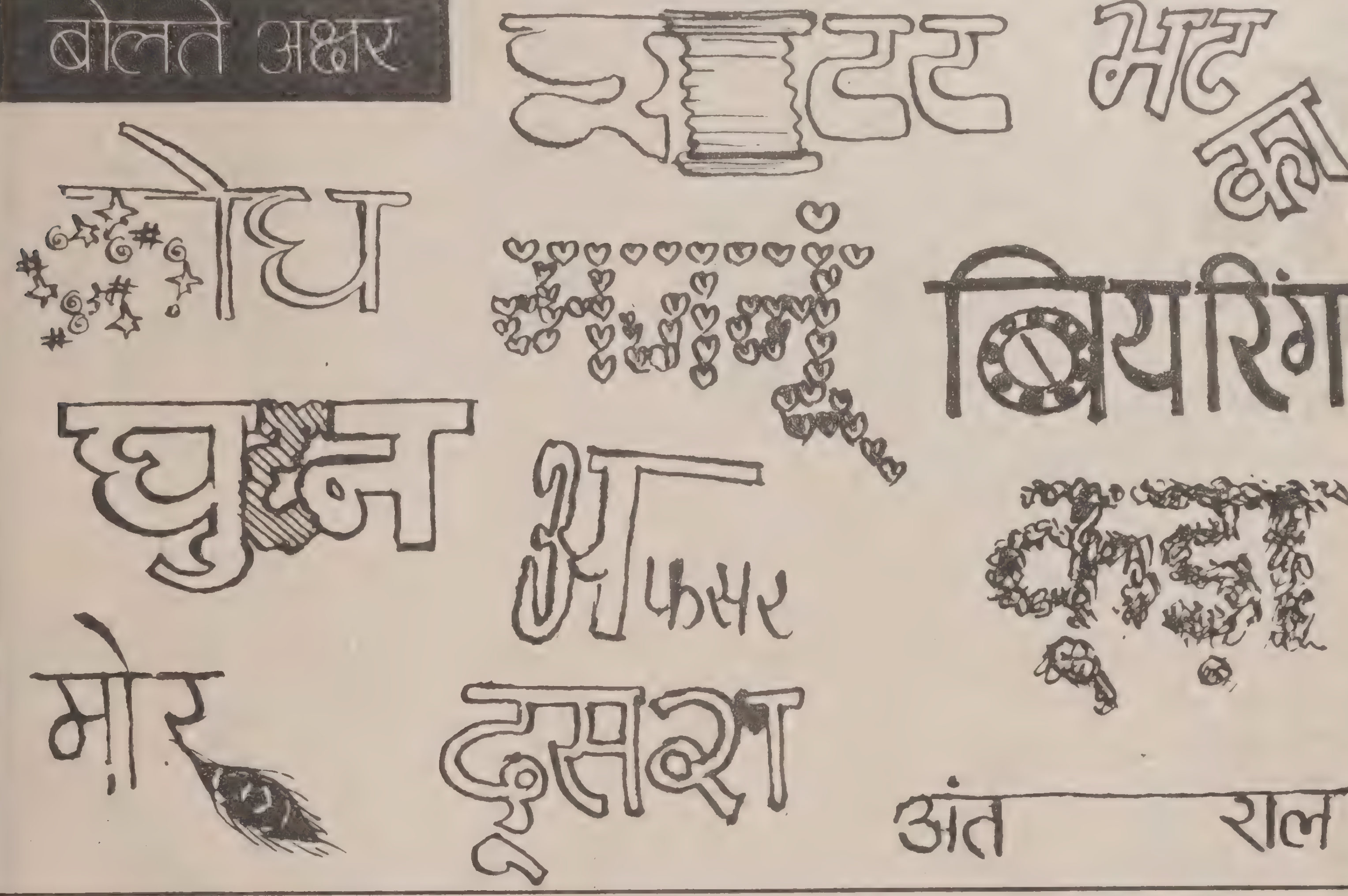
अमिताभ की बात भी हो जाये। इस सुपर स्टार की बात करते ही नौजवान ऐक्टर कुमार गौरव इत्यादि की हालत पर दुःख आता है। कुमार गौरव का अभिनय 'स्टार' से बुरी तरह फ्लाप हुआ था। इन बेचारे स्टारों को एक-एक करके प्रोड्यूसर छोड़ते जा रहे हैं जब से उन्हें मालूम हुआ है कि अमिताभ फिर से पूरे जोर-शोर से अभिनय करने आ रहे हैं।

मनमोहन देसाई जो कुमार गौरव के साथ 'लव बर्डस' बनाने वाले थे इस फिल्म के बनाने का ख्याल फिलहाल एक तरफ कर अपनी अमिताभ के साथ बनने वाली फिल्म के काम की शुरुआत में लग गये हैं 'दर्द' मनमोहन देसाई की नई फिल्म है जिसके हीरो अमिताभ होंगे।

प्रकाश मेहरा भी अपने सब काम एक तरफ कर अमिताभ अभिनित अपनी फिल्में 'खैर' और 'शराबी' बनाने में लग गये हैं।

शशि कपूर को भी मालूम होने लग गया है कि प्रोड्यूसर होना केवल एक्टर होने से बहुत ही अलग है और आजकल रेखा के इतने करीब होने के बावजूद उन्हें उसके पूरे नखरे सहने पड़ते हैं। उस दिन अपनी फिल्म 'उत्सव' के एक सीन में रेखा को बारिश में भीगना था, ऐसे सीन के समय काम में आने वाली बारिश की मशीन एकत्रित ठंडा पानी उंडेलने लगी परन्तु रेखा को डर था कि कहीं उसे ठंडे पानी में भीगने से जुकाम न हो जाये इसलिये उसने बारिश के पानी को गरम करने की फरमाईश की। सौभाग्य से शशी स्वयं उस समय सैट पर थे। उन्होंने तुरन्त 50 ड्रम गर्म पानी का आर्डर दे दिया। यह दूसरी बात है कि रेखा को जुकाम से बचाने के लिए शूटिंग कुछ घंटों के लिए रुक गई।

बोलते अक्षर



हिल स्टेशन प्रवास का

आध्यात्मिक पहलू

जी हाँ, दीवानी नजर से देखिये तो हिलस्टेशनों के कई मनोरंजक पहलू नजर आयेंगे। कुछ पहलुओं पर हमारी दीवानी नजर के साथ अपनी दीवानी नजर का फोकस मिलाकर देखिये।





ग्राप हिल स्टेशन जाते हैं तो ग्रपना पालतू कुत्ता या बिल्ली पड़ोसी की देख-रेख में छोड़ जाते हैं। इससे भाईचारे ग्रौर सहयोग की भावना को बल मिलता है। ग्रगली बार वह जायेंगे तो ग्राप उनकी बकरी या मुर्गी की देखभाल करेंगे।



ग्राप हिल स्टेशन से लौट कर पाते हैं कि ग्रापके घर का सामान चोर साफ कर गये हैं या नौकर उन्हें लेकर चम्पत हो गया है तो ग्रापको सन्यास धारण करना पड़ेगा। इससे ग्रापका परलोक सुधर जायेगा।



पहाड़ों पर ग्रापको कई ऐसे ग्रवसर मिलेंगे जब ग्राप ग्रपनी जिन्दगी की परेशानी से हमेशा के लिये मुक्ति पा सकेंगे।



हिल स्टेशन से लौटने पर ग्राप ग्राफिस में ग्रपने सहयोगियों पर रौब डाल सकते हैं। बड़े-बड़े होटलों के किस्से सुना सकते हैं बेशक ग्राप खुद धर्मशाला में ही क्यों न ठहरे हों।



वैसे ही मेम साहब भी ग्रपनी सहेलियों को मनगढ़न्त किस्से सुना कर वाहवाही लूट सकती हैं।



ग्रीष्मावकाश के बाद आप घर आयेंगे तो होटलों से मारे चाकू, चम्मच, छुरियां, व तौलिये आप में आत्म-विश्वास पैदा करेंगे। आप स्वयं को दिलासा दे सकेंगे कि आप उतने बुद्धू नहीं हैं जितने लोग समझते हैं।



हिल स्टेशनों पर पैदल चलते-चलते आपकी लड़की और छरहरी और सुन्दर हो जायेगी। लौटने पर मुहल्ले के लड़कों की आंखें पहले से ज्यादा सुख पायेंगी और उसका सारा पुण्य आपको मिलेगा।



पहाड़ों पर जुकाम जल्दी हो जाया करता है। आपसे आपकी प्रेमिका को भी जुकाम लग जायेगा तो वह फिर यह नहीं कह सकेगी कि आपने कभी उसे कुछ दिया ही नहीं।



आप पत्नी को लेकर चढ़ाई चढ़ें जब पत्नी का दम फूल जाये तो वह बात कहें जो आप उसे कभी बताने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे। दम फूले होने की वजह से वह कुछ कह नहीं पायेंगी।



पहाड़ों में बन्दर खाने-पीने की चीजें छीन ले जाते हैं। इस प्रकार डाइटिंग हो जाती है। शहरों में स्लिमिंग कोर्स वाले यही काम करने के सैंकड़ों रुपए लेते हैं। यहां मुफ्त में काम हो गया।



हिल स्टेशनों पर बीवी-बच्चों में बन्दरों की दहशत बैठ जाती है जो लौटने पर भी नहीं जाती। आप जरूरत पड़ने पर बन्दरों की खौं-खौं की आवाज निकाल कर उन्हें डरा सकते हैं।



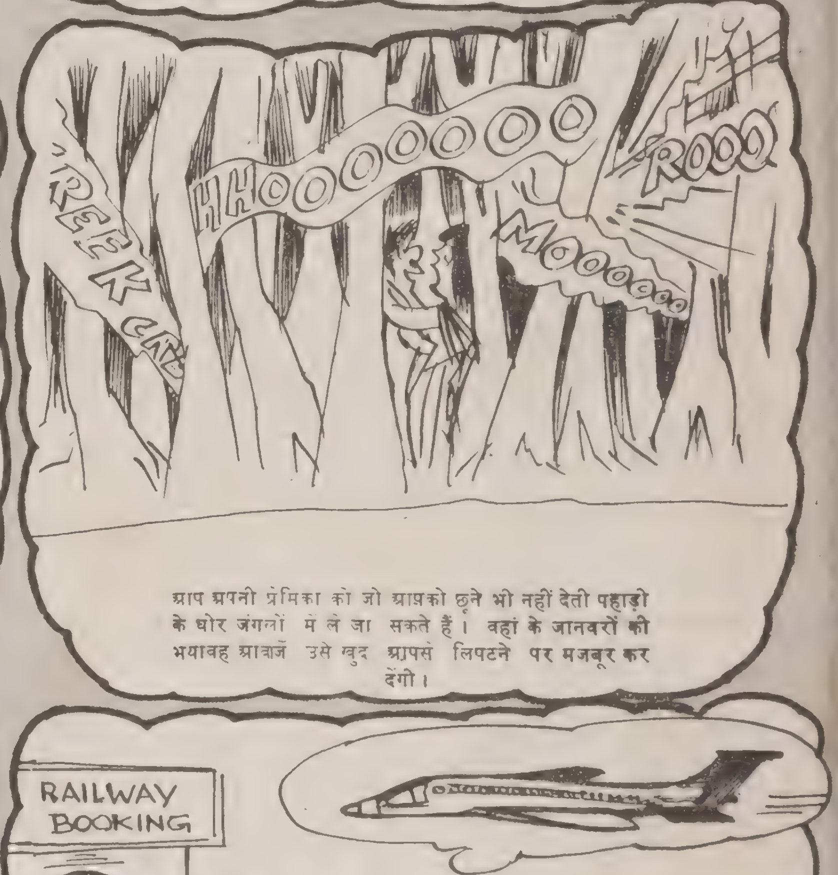
हिल स्टेशन मे आप कोई प्रेजेन्ट लाकर प्रियजन को दे सकते हैं । मजा यह है कि वहा से आप दो रुपये में कोई चीज ले आइए,यहां उसे तीन सौ रुपये की कह सकते हैं किसी को पता नही लगेगा ।



पहाड़ो पर सैर करते समय कोई पत्थर गिर कर आपके सिर को लगे तो आप याददाश्त खोने का नाटक कर सकते हैं । बीवी से पूछ सकते है तू कौन है? दोस्तों से पैसे उधार लिये हैं उनके बारे मे कह सकते हैं मुझे तो कुछ याद नहीं है ।



हिल स्टेशनों को ऊंचाइयों पर आपका रेडियो ऐसे-ऐसे स्टेशन भी पकड़ेगा जिसका नाम आपने कभी नहीं सुना होगा । आपका मतलब होगा कि आप कुछ जानते है जो दूसरे नही जानते ।



आप अपनी प्रेमिका को जो आपको छूने भी नहीं देती पहाड़ो के घोर जंगलों में ले जा सकते हैं । वहां के जानवरों की भयावह आवाजें उसे खुद आपसे लिपटने पर मजबूर कर देंगी।



हिल स्टेशनों पर बिल देख-देख उछलने की ऐसी आदत पड़ जायेगी कि कभी आपको जेल जाना पड़े तो उन बिलों को याद कीजिए और आप ऐसे उछल पड़ेंगे कि जेल की दीवार के बाहर जा गिरेंगे ।



आप जेबकतरे है तो गर्मियों में रेलवे बुकिंग की [illegible] सामने की क्यूओं में जेबें काटिये । समर रश में आपको [illegible] आमदनी होगी आप खुद हवाई जहाज में श्रीनगर जा [illegible]।

धारावाहिक उपन्यास

भाग ४

घर

- राजवंश

हरीश ने अपने सूखते गले को थूक निगलकर गीला करने का प्रयत्न किया और बड़ी मुश्किल से बोला, ''अच्छा . . .त . . .त . . .तुम ठहरो . . .म . . .म . . .मैं कुछ लोगों को बुलाता हूं।

''नहीं . . .'' रजनी दरवाजे के सामने हाथ फैलाकर खड़ी होती हुई बोली, ''तुम्हारी आंखों का चोर बता रहा है कि तुम भागने की चिन्ता में हो—मगर मैं ऐसा नहीं होने दूंगी . . .मैं तुम्हें यहीं बन्द करके स्वयं पड़ोसियों को बुलाकर लाती हूं।''

हरीश का दिमाग भक् से उड़ गया। रजनी दरवाजे की ओर मुड़ी ही थी कि हरीश ने झपटकर उसकी बांह पकड़ ली कंपकंपाती आवाज में गिड़गिड़ाया—

''रजनी . . .म . . .म . . .मेरी बात तो सुनो।''

''अब तुम्हारी बातें पड़ोसी सुनेंगे।'' रजनी नागिन के समान फुफकारी, ''मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं छोड़ूंगी—मेरी बाजू छोड़ दो, वर्ना चिल्लाती हूं।''

दूसरे ही क्षण हरीश ने झपट कर उसका मुंह दबा दिया . . .रजनी पर शायद बहुत पागलपन सवार था . . .वह हरीश से लिपट पड़ी और फिर धीरे-धीरे हरीश के दिमाग में भी जानवर समाता गया . . .उसने फुर्ती से रजनी की गर्दन पकड़ ली। रजनी ने बौखलाकर अपनी गर्दन छुड़ाने का प्रयत्न करते हुए चिल्लाने का प्रयत्न किया मगर हरीश की पकड़ उसकी गर्दन पर तीव्र होती गई—और फिर रजनी की आंखें बाहर निकल आईं . . .जुबान मुंह से बाहर निकल पड़ी . . .चेहरे पर दम तोड़ने की-सी किया झलकी और फिर वह हरीश के हाथों में झूल गई।

हरीश ने रजनी को वहीं छोड़ दिया . . .उसका बदन भय से थरथर कांप रहा था। हे भगवान! यह क्या हुआ? यह तो मर गई। मैंने खून कर दिया? खून, गिरफ्तारी, हथकड़ियां, हवालात, जेल, मुकद्दमा, अदालत . . .फांसी—हरीश हड़बड़ाकर पीछे हट गया—दूसरे ही क्षण उसने अपना सन्दूक खोला, उसमें नोटों की जो भी गड्डी नजर आई वह जेब में ठूंसी और जल्दी से बत्ती बुझाकर दरवाजे के पास आया—फिर थोड़ी देर बाद ही वह गली में से निकलकर तेजी से सड़क पर दौड़ रहा था उसका मुंह स्टेशन की ओर था और इस तरह पलट-पलटकर देख रहा था जैसे रजनी का भूत उसका पीछा कर रहा हो।

कमल गली में घुसा तो कुछ अजीब-सा सन्नाटा छाया हुआ था। आज सुनीता जाने क्यों कॉलिज नहीं आई थी इसलिए कमल स्वयं ही उसे पढ़ाने के लिए उसके घर की ओर चल पड़ा था। हरीश के कमरे की ओर उसने एक नजर डाली जो बन्द था मगर वह यह न देख सका कि कमरे के दरवाजे पर जो मोटा ताला पड़ा है वह 'सील्ड' है—

कमल ने सुनीता के दरवाजे पर दस्तक दी . . .चंद क्षण बाद ही कल्लू ने दरवाजा खोला और उसने कमल को कमरे में पहुंचा दिया . . .यह एक नई बात थी कि सुनीता कमरे में नहीं मिली . . .कमल ने कुछ सोचा और फिर धीरे से बैठ गया

. . .थोड़ी देर बाद ही कृष्णा कमरे में दाखिल हुई और कमल ने शिष्टतापूर्वक खड़े होकर नमस्ते कही। कृष्णा ने अभिवादन का उत्तर तो दिया परन्तु कमल ने अनुभव किया कि कृष्णा ने न उसे बैठने को कहा था और न उनके चेहरे पर नित्य की प्रसन्नता ही आई थी . . .उसने धीरे से पूछा, ''मांजी . . .सुनीता तो अच्छी हैं? आज वह कॉलिज भी नहीं आई।''

''बेटे—हरीश तुम्हारा बचपन का दोस्त है ना?''

''जी हां—क्यों?''

''तुमने सुनीता के रिश्ते की बात करते समय हमें हरीश के चरित्र के बारे में क्यों कुछ नहीं बताया था?''

''मांजी . . .अगर मैंने आपके विचारों में 'हां' अनुभव की होती तो तुरन्त ही बता देता . . .अगर आप रिश्ता स्वीकार ही न करतीं तो क्या जरूरत थी किसी के अवगुणों से पर्दा उठाने की?''

''तुम यह चाहते थे कि सुनीता का जीवन उसके साथ बर्बाद हो जाए?''

''मांजी सुनीता जी से मेरी कोई दुश्मनी नहीं . . .हरीश मेरा बचपन का दोस्त था . . .उसके चरित्र के बारे में जो कुछ भी आपने सुना होगा वह वास्तव में उसका चरित्र नहीं था . . .उसके चाची-चाचा के चरित्र की परछाईं थीं। हरीश अन्दर से अच्छा आदमी है, बाहर से कितना ही बुरा सही। अगर बुरा भी है तो हर बुरे आदमी के जीवन में एक दिन ऐसा आता है जब उसके मन में एक अच्छा आदमी बनने की इच्छा जागती है और उसका कोई कारण होता है—हरीश भी अब अच्छा आदमी बनने का प्रयत्न कर रहा है और उसका कारण सुनीता जी हैं। किसी गिरे हुए को उठाना कोई पाप नहीं है मांजी।''

''जरूर . . .!'' कृष्णा देवी ने कटुता से कहा, ''लेकिन अगर कोई गन्दगी की दलदल में सिर तक धंस चुका हो तो उसे क्या तुम बाहर निकाल सकते हो।''

''मांजी! मेरा विचार है हरीश अभी उस स्थिति तक नहीं पहुंचा।''

''खूब . . .तुम अभी तक अपने दोस्त के बारे में एक बहुत बड़े बोध भ्रम में हो। शायद तुम्हें नहीं मालूम कि आज सुबह हरीश के कमरे से एक नौजवान हरिजन लड़की की लाश निकली है जो उसके बच्चे की मां बनने वाली थी।''

''नहीं . . .।'' कमल हड़बड़ाकर एक कदम पीछे हट गया।

''हरीश रात ही से गायब है . . .लड़की की गर्दन पर गला घूंटने के निशान पाए गए हैं। लड़की के तीन भाई, जिनमें से एक हरीश के कारखाने में



काम करता है, सवेरे-सवेरे आए थे . . .दरवाजा खुला पाकर वह अन्दर घुसे तो लाश मिली . . .तीनों क्रोध से बिफरे हुए खूनी हो रहे हैं . . .हरीश को किसी मूल्य पर जिन्दा नहीं छोड़ेंगे—हरीश का सन्दूक खुला मिला है, दो-तीन नोट जमीन पर गिरे पड़े मिले हैं जैसे वह बहुत अधिक बौखलाहट में केवल रुपये निकालकर भागा है।''

कमल कुछ न बोला। उसके मस्तिष्क में सीटियां-सी बज रही थीं . . .कृष्णा ने फिर कहा, ''शायद यहां किसी को तुम्हारी और हरीश की दोस्ती का ज्ञान नहीं वर्ना पुलिस भी तुम्हें कष्ट देती और लड़की के तीनों भाई भी तुम्हारे पीछे पड़ जाते।''

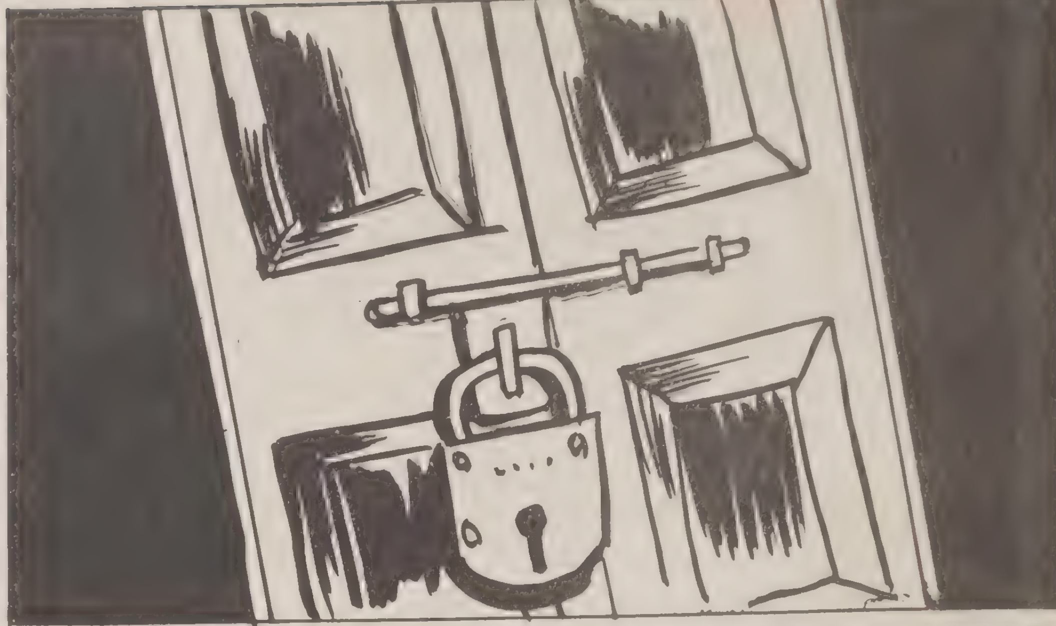
कमल ने बहुत धीरे से, बड़े निर्बल स्वर में कहा, ''शायद . . .मेरे अनुमान में कोई बड़ी भूल रह गई . . .सुनीता देवी मेरे कारण व्यर्थ ही किसी झंझट में पड़ने वाली थीं—यह मेरी भूल थी . . .मैं आप लोगों से लज्जित हूं—शायद मैं अब आपको कभी अपना मुंह न दिखाऊं!''

यह कहकर कमल चुपचाप दरवाजे की ओर बढ़ा—कृष्णा ने भी उसे नहीं रोका। कमल दरवाजे से बाहर निकल आया . . .उसने एक नजर हरीश के कमरे के सील्ड ताले पर डाली और उसका सारा शरीर झनझना के रह गया—फिर वह तेज-तेज चलता हुआ गली के सिरे की ओर बढ़ गया।

लायब्रेरी के क्लॉक ने छै के घन्टे बजाए और कमल पुस्तक छोड़कर उठ गया . . .अभी वह बाहर जाने के लिए मुड़ा ही था कि उसे सामने एक चपरासी खड़ा नजर आया। उसने बिना कुछ कहे हुए कमल को एक पर्चा दिया और चला गया। कमल ने आश्चर्य से पर्चा देखा और खोलकर पढ़ा . . .लिखा था—

''कमल! मैं साइड के कुंज में खड़ा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं—तुरंत मुझसे मिल लो।''

—हरीश



कमल का पूरा शरीर झनझना गया . . .वह जल्दी से पर्चा जेब में ठूंसकर बाहर निकला और तेजी से गार्डन की ओर बढ़ा। थोड़ा-थोड़ा अंधेरा फैलने लगा था . . .मगर कुंज में पेड़ की छांव के कारण खासा अंधेरा था। कमल बड़ी तेजी से कुंज में जा पहुंचा मगर उसे वहां कोई दिखाई नहीं दिया। इधर-उधर देखकर वह बहुत धीमे से पुकारा—

''हरीश . . .ए . . .हरीश . . .कहां हो तुम?''

अचानक ही एक पेड़ के पीछे से हल्की-सी हंसी की आवाज आई और कमल के मस्तिष्क को झटका-सा लगा क्योंकि दूसरे ही क्षण सुनीता उसके सामने खड़ी थी . . .हल्के अंधेरे में भी उसका चेहरा चमक रहा था . . .दांत मोतियों की लड़ी के समान दिखाई दे रहे थे। कमल ने हल्की-सी सांस ली और मुस्कराहट के साथ बोला—

''कैसी हैं आप?''

''मैं तो ठीक हूं . . .मगर आपको अपने दोस्त से शायद बहुत प्यार था।''

''न होता तो वह मेरा दोस्त ही क्यों कहलाता?''

''अगर वह इस समय आपको मिला होता तो आप उसे क्या परामर्श देते?''

''यही कि स्वयं को पुलिस के हवाले कर दे . . .दुनिया का हर पाप छुप सकता है लेकिन खून ही शायद एक ऐसा अपराध है जो आज नहीं तो दस-बीस बरस बाद सही खुलता जरूर है।''

''और अगर वह आपकी सीख न मानता तो?''

''भला उसके बारे में मैं क्या कह सकता हूं? हर व्यक्ति की अपनी एक अलग धारणा होती है, एक नियम होता है, एक दृष्टिकोण होता है जो शायद अपने माता-पिता के कहने पर भी वह नहीं बदलता . . .यह अच्छा बुरा उसका अपना व्यक्तित्व है।''

''बड़ा गहरा अध्ययन है आपका मानव स्वभाव के बारे में . . .।''

''आजीविका की परिस्थितियों ने एम. कॉम करने पर विवश-सा कर दिया, वर्ना मेरा प्रिय विषय तो 'साइकोलोजी' था।''

''आप और साइकोलोजी!'' सुनीता ने मजाक



उड़ाने वाले ढंग में उसकी ओर हाथ उठाकर ठहाका लगाया और देर तक हंसती रही . . .फिर बोली, ''आपको साइकोलोजी की समझ-बूझ है ?''

''कुछ पहेलियां अच्छे-अच्छे बुझक्कड़ों से भी नहीं बूझी जातीं।''

''आप साइकोलोजिस्ट होने का दावा करते हैं और फिर भी अपने दोस्त के लिए मेरी रिश्ता मांगने पहुंच गए।''

''हरीश के बारे में मेरी साइकोलोजी बिल्कुल गलत नहीं थी . . .वह जरूर किसी आकस्मिक घटना का शिकार हुआ है। वह लड़की हरीश के बदले हुए चरित्र से पहले की शिकार भी तो हो सकती है।''

''भाड़ में गया हरीश . . .मैं हरीश की बात नहीं कर रही।''

''फिर किसकी बात कर रही हैं।''

''मैं स्वयं अपनी बात कर रही हूं।'' सुनीता ने चंचलता से मुस्करा कर कहा।

''जी —।'' कमल ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

''हरीश का रिश्ता सुझाने से पहले आपने कभी मेरी साइकोलोजी का अध्ययन भी किया था ?''

कमल कुछ न बोला . . .वह चुपचाप ध्यानपूर्वक सुनीता को देखता रह गया था . . .सुनीता ने एक बार नजरें उसके चेहरे पर डालीं फिर आंखें झुकाकर बोली —

''कमल बाबू . . .हरीश के चरित्र का भांडा अभी न भी फूटा होता तो भी मैं उसे तो किसी मूल्य पर मुंह लगाना पसन्द न करती क्योंकि मैं उस आदमी से उतनी ही घृणा करती हूं जितनी एक नारी के खजाने में हो सकती है। स्त्री जब आयु के उस दौर में पदार्पण करती है जहां से पुरुष की दृष्टि उसकी ओर उठने लगती है वह उस दृष्टि का अभिप्राय भी समझने लगती है और उस समय से स्त्री के मन में एक ऐसे पुरुष की चाह और खोज आरम्भ हो जाती है जिसकी आंखों में वह अपने प्रति वासना के स्थान पर आदार और प्यार पा सके।

''मैंने अपनी इतनी आयु में पहला पुरुष आपको देखा था जिसकी नजरों ने न कभी मेरे शरीर का नाप-तोल किया और न चेहरे को परखा . . .इसके विपरीत जब मेरा आपसे परिचय हुआ तो मैंने आपकी निगाहों में अपने लिए ही नहीं बल्कि अपने जैसी दूसरी लड़कियों के लिए भी सिवा आदर के कुछ न पाया . . .मेरी कल्पना में एक पुरुष का जो 'आइडियल' था उसकी सारी मांगें आपका व्यक्तित्व पूरी करता है . . .मेरे आईडयल में आप हैं . . . मैंने आपको पसन्द किया है . . .मैं जितनी अल्पभाषिन और 'रिजर्व्ड' हूं उतनी ही मुंहफट और साफ कह देने वाली भी हूं। मुझे यह कहने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं कि मेरे लिए हरीश के स्थान अगर आपका रिश्ता आया होता ता मैं इसे अपना सौभाग्य समझती—।''

सुनीता ने अपनी बात समाप्त की, फिर आंखें उठाकर एक नजर कमल पर डाली और तेजी से कुंज से बाहर चली गई —और कमल . . .! वह तो कुंज के उस गेट को देखता रह गया जिससे सुनीता बाहर गई थी . . .वह सन्नाटे में खड़ा था . . .दिल की धड़कन कानों में धमक उत्पन्न कर रही थीं। जो कुछ सुनीता कह गई थी वह तो सपने में भी नहीं सोचा था। सुनीता को पहले उसने केवल एक स्टूडैंट के रूप में देखा था, फिर हरीश की प्रेमिका के रूप में . . .लेकिन क्या सुनीता सचमुच हरीश की प्रेमिका थी ? प्रेमिका थी भी अगर लेकिन अब तो सुनीता का जीवन हरीश के साथ बर्बाद करने की बात भी नहीं सोच सकता इसलिए कि हरीश खूनी है, हत्यारा है, और हर हत्यारा जीवन के किसी-न-किसी भाग में पकड़ा जरूर जाता है—वैसे भी सुनीता शायद सचमुच हरीश के साथ शादी पर सहमत न होती।

कमल मस्तिष्क में उलझन लिए हुए धीरे-धीरे बाहर निकल आया।

कमल क्लास रूम से निकलकर लायब्रेरी की ओर बढ़ रहा था कि किसी की खंखार उसके कानों से टकराई . . .वह चौंक पड़ा . . .सुनीता बड़ी गंभीर बनी उसके साथ चल रही थी —कमल ने मुस्कराकर कहा —

''हैलो —!''

''आज मेरा गला खराब है इसलिए 'हैलो' का

उत्तर हैलो से नहीं दे सकती।''

''मगर आपकी आवाज से तो नहीं लगता कि आपका गला खराब है।

''अन्दर की खराबी है . .कुछ रोग ऐसे हैं जो स्पष्ट दिखाई नहीं देते।''

''क्या ठण्ड लग गई थी?''

''नहीं, एक फिल्म के डायलॉग रट रही थी जो बोल-बोल कर साथ में रोते जाना भी था . . .कई दिन से अभ्यास कर रही हूं।''

''क्या किसी ड्रामे में काम कर रही हैं?''

''जी हां . . .यह जीवन भी तो एक नाटक है और यह दुनिया एक मंच . . .बाई दी वे, आप तो ठहरे साइकोलोजिस्ट, क्या आप बता सकते हैं कि पत्थर पर अगर कोई सिर मारे तो कितना लहू बहेगा?''

''भला साइकोलोजी का पत्थर और लहू से क्या संबंध?''

''बात यह है कि कुछ मानव, शरीर में तो मांस-हाड़ के दिखाई देते हैं किन्तु होते हैं वास्तव में पत्थर के।''

''जी . . .?''

''अभी इन डायलॉग की पूरी प्रैक्टिस नहीं हुई . .प्रैक्टिस होने पर आपको तार द्वारा सूचित कर दूंगी।''

इतने में वह लायब्रेरी के पास पहुंच गए . . .सुनीता हंसती हुई कैंटीन की ओर बढ़ गई और कमल कुछ देर वहीं उसे देखता रहा फिर सिर हिलाकर लायब्रेरी में घुस गया . . .लेकिन पुस्तक लेकर पढ़ने लगा तो पहले ही पृष्ठ पर शब्दों के स्थान पर उसे सुनीता की छवि दिखाई दी . . .कभी नजरें झुकाए, कभी चंचल नजरों से उसकी ओर देखती . . .और कभी मौन, कोमल विनय भरी . . .कोई अज्ञात-सा विनय . . .। कमल ने घबराकर पुस्तक बंद कर दी, सामने कोई लड़की मुंह दबाकर हल्की-सी हंसी के साथ अपनी साथी से कुछ कह रही थी . . .कमल को ऐसे लगा जैसे सुनीता बोल रही हो . . .।

कमल बौखलाकर उठा और लायब्रेरी से निकल आया—उसके माथे से पसीना फूटने लगा था।

कमल लायब्रेरी के सामने वाले कुंज में पहुंचा तो उस ने देखा सुनीता ने एक घुटना जमीन पर रखकर दूसरा पांव खड़ा कर रखा था और एक हाथ सीने पर रखकर दूसरा हाथ आगे बढ़ाकर एक पेड़ से सम्बोधित होकर कह रही थी।

''ऐ कठोर हृदय! क्या सचमुच तेरे सीने में हृदय के स्थान पर पत्थर का टुकड़ा रखा है? अरे नारी सौंदर्य तो बड़े-बड़े ऋषियों-मुनियों की तपस्या भंग कर देता है मगर तेरे कानों पर जूं तक नहीं रेंगती . . . लगता है बचपन ही से तेरे सिर में 'लाइसिल' डाला गया है . . .अरे जामिल . . .।''

कमल को हंसी आ गई और सुनीता चौंककर जल्दी से खड़ी हो गई . . .फिर बोली—

''आ गए आप? आज डायलाग की रिहर्सल पूरी हो गई है . . .बस अंतिम शब्द याद नहीं आ रहे . .आप बैठिए, बस चंद मिनट की बात है, अभी याद आ जायेंगे—।''

''मेरा विचार है,'' कमल ने धीरे-से हंसकर आगे बढ़ते हुए कहा, ''अब शायद यह डायलॉग उगलने की जरूरत नहीं रही।''

''अच्छा!'' सुनीता खुशी से अनायास उछल पड़ी।

''क्योंकि धीरे-धीरे इस पेड़ को पता चलने लगा है कि इसका शरीर पत्थर का नहीं हाड़-मांस का है और इसके सीने में एक दिल भी है जो धड़कता है—उस धड़कन में अब एक नाम भी गूंजने लगा है।''

''हाय राम! कहीं मैं खुशी से पागल न हो जाऊं?''

''नहीं-नहीं . . .भगवान के लिए ऐसा मत करना . . .पागलखाने वाले महीने में केवल एक बार मिलने की अनुमति देते हैं''

फिर दोनों एक साथ हंस पड़े और सुनीता हंसती हुई अनायास कमल के सीने से लग गई . . .हंसते में क्या सोचकर उसकी आंखों से आंसू आ गए . . .उसने कमल को और भी भींच लिया और सिसक पड़ी . .

कमल जवाहर पार्क में पहुंचा तो सुनीता फव्वारे की मुंडेर पर बैठी थी . . .कमल को देख उसने कोई विशेष उत्साह प्रगट नहीं किया। कमल उसके पास पहुंचकर उसके साथ ही मुंडेर पर बैठता हुआ बोला— ''शायद . . .मैं केवल पांच मिनट लेट हुआ हूं।''

''दस मिनट भी हो जाते तो क्या अन्तर पड़ता?'' सुनीता ने ठण्डी सांस लेकर कहा।

''रात कितने तारे गिने?''

''एक भी नहीं . . .मां ने आंगन में सोने ही नहीं दिया।''

''आज उदास क्यों नजर आ रही हो?''

''नजर आ रही हूं? अरे मैं सचमुच उदास हूं।''

''कोई कारण तो होगा उदासी का?''

''बिना कारण तो पत्ता भी नहीं हिलता।''

''क्या मुझे बताने का नहीं . . .।''

''नहीं . . .।''

''क्यों?''

''तुम्हारा दिल टूट जाएगा''

''यह भी कोई चीनी, शीशे का बना होता है? क्या उपमा रखी है इन कवियों ने भी।''

क्रमशः

बन्द करो बकवास




माचू पीचू
मुर्दों का व्यापारी
कहानी एवं चित्रांकन: रघुबीर सिंह
सेक्रेटरी जी, आपके पास खुले एक रुपया आठ आने होंगे।
कौन मर गया है? किसके कफ़न के लिये डेढ़ रुपये की जरूरत पड़ गई।
मरा तो कोई नहीं, अगर यही हाल रहा तो मर जायेंगे। हमें चाय का सामान मंगवाना है। पचास पैसे का दूध, अस्सी पैसे की चीनी और बीस पैसे की पत्ती का पैकेट आज सब की जेबें खाली हैं।
अबे तुम्हें पता नहीं रात को कटर जी ने खाना भी नहीं खाया।
तो क्या मिस कटर भूखी सो गई थी!



हाँ, सिर्फ एक किलो रबड़ी और हमने तीन किलो दूध पिया था। बिना खाना खाये भूखे सोगये थे।
ओ खाऊ, साथ में हमें खा जाते, तभी मैं देख रहा हूँ तुम दोनों का रंग लाल, गाल बाहर और कान अन्दर धँसते जा रहे हैं।
हाँ तुम ठीक कहते हो। हमारे गाल अन्दर, कान बाहर खरगोश की तरह आ रहे हैं और चाय के बिना हमारा बोलोराम हो रहा है।
आईडिया! मर जाओ और फिर बोलोराम। चंदा, पर्चियाँ बेरोजगारी दूर।
जल्दी बोलो तुम्हारे आईडिये में चाय का प्रोग्राम है!
अगर तुम में से कोई एक मर जाये तो चाय क्या हम चाय के साथ परांठे भी खा सकते हैं।
हमारे मुर्दे बेच कर रबड़ी खाया करोगी हमें अपना आईडिया विस्तार पूर्वक समझाओ। इसे बॉस का आर्डर समझो।
मिस कटर बताती है-
नासपीटे को सड़क पर चक्कर आ जाये और गिर जाये सब शोर मचायेंगे। डा० बोलोराम कहेगा कि यह मर गया है, मैं रोना चालू कर दूँगी कि मैं बाहर से इलाज कराने आई थी पर यह मर गया। इसका कफन और लकड़ी के इंतजाम के लिये मेरी मदद करें। बस फिर रुपये ही रुपये हो जायेंगे।
आईडिया ठीक है चलो किसी चालू सड़क पर यह नाटक करें।
वह ऐसा ही करते हैं नासपीटा एक साफ सी जगह देखकर चक्कर खा कर गिर जाता है। यह देखकर कटर कहती है-
हाय, मेरे इकलौते पति! कोई है इस शहर में या सारे मर गये कोई डाक्टर को बुलाओ।
क्या हुआ है इन्हें? आप क्यूँ रो रही हैं?


अंधे हो, देखते नहीं मैं गाँव से अपने पति का इलाज कराने आई थी पर ये चक्कर खाकर गिर गये हैं।
डा० बोलोराम अपनी टूटी लगाकर नासपीटे को चैक करता है।
NO HOPE
तभी वहाँ पर माचू, पीचू और रगड़ू आते हैं और डा० बोलोराम से कहते हैं –
डा० साहब इन्हें क्या हुआ है?
ये मर गया है या जिंदा है।
ये बिल्कुल मर गया है।
ये सुनते ही मिस कटर और जोर-जोर से रोने लगती है –
हे भगवान, तूने इसे मेरी शादी से पहले ही क्यूँ नहीं उठा लिया। अब मैं विधवा इसके कफन का इंतजाम कहाँ से करूँगी? खाऊँगी क्या? मैं अपने घर वापस कैसे जाऊँगी?
आप रोईये मत आपको रोते देखकर मुझे भी रोना आ रहा है। आप चुप हो जाईये। अभी चंदा इक्टठा हो जाता है।
देखते-ही देखते लोग नासपीटे पर पैसे फेंकने शुरू कर देते हैं।


कुछ ही देर में वहाँ एक कार आती है उसमें से एक आदमी उतर कर कहता है-
ये क्या हो रहा है ? ये मुर्दा कैसा पड़ा हुआ है ?
हजूर ये इस औरत का पति है। जो मर गया है। आप भी कुछ रुपये दे दीजिये ताकि इसका क्रिया-कर्म हो सके।
आप इस मुर्दे को मेरी गाड़ी में डाल दें। इसका क्रिया कर्म मैं कर दूँगा, आप चिंता न करें और इसकी पत्नी को भी मेरी गाड़ी में बिठा दें। आप निश्चिंत रहें मैं सारा खर्चा कर दूँगा।
माचू, पीचू नासपीटे को घसीट कर गाड़ी में डाल देते हैं और मिस कटर भी गाड़ी में बैठ जाती है।
गाड़ी चल देती है माचू, पीचू, डा० बोलोराम और रगडू देखते ही रह जाते हैं।
कुछ गड़बड़ लगती है।
कहीं मुर्दे के बहाने कटर को तो नहीं भगा ले गया।
अबे तुम्हें मिस कटर की पड़ी है उस नासपीटे का क्या होगा? कहीं वह उस का नास न पीट दे।
अबे होना क्या है नकली मुर्दे का असली मुर्दा बना देंगे।


चलो उनका पीछा करें।
चारों उस कार के बारे में पूछते हैं तो उन्हें तीसरे दिन पता चलता है कि गाड़ी जंगल की ओर जाती देखी गई है।
सभी जंगल की ओर जाते हैं तभी उन्हें वही कार दिखाई देती है।
जरूर इस जंगल में कोई गड़बड़ है मेरे ख्याल से नासपीटा और मिस कटर इसी जंगल में हैं।
इस जंगल में एक पुराना महल है शायद उसी महल में कोई रहस्य हो।
अरे! ये तो उसी आदमी की गाड़ी है। क्या इस जंगल में गाड़ी को घास चराने लाया है।
वो चारों जंगल में उसी महल के अंदर घुस जाते हैं तभी वो देखते हैं वही गाड़ी चलाने वाला आदमी दूसरे आदमी से कह रहा होता है-
वो जो शहर से मैं जिंदा मुर्दा लाया था उसका पेट फाड़ कर उसके अंदर चोरी के हीरे रख कर उसका पेट सी कर गोवा पहुँचा दो और उस लड़की से कहो हमसे शादी करले अगर वह न कहे तो उसका भी पेट फाड़कर उसमें सोने के बिस्कुट भरकर सेठ रत्नलाल के यहाँ भेज दो।
सर और कोई खास संदेश है।
खास संदेश ये है कि इन मुर्दों से माल निकालने के बाद इनके ढाँचे सुरक्षित रखले क्योंकि हम स्कल्टन के भी व्यापारी हैं।
ये बातें सुनकर रगडू जोश में आकर कहता है-
अबे चार और हैं हमारे पेट फाड़ कर इनमें भी कुछ भर दो।


इतना कहते ही माचू, पीचू, रगड़ू और डा० बोलोराम उसी आदमी के सामने आ जाते हैं।
सोने के बिस्कुट मेरे पेट में भर देना।
भईया मेरे पेट में भी भरना।
तो वो श्रीमान आप ही हैं जिन का पेपरों में कई महीनों से जिक्र आ रहा है कि कब्रों से मुर्दे गायब हो रहे हैं और कई जिन्दा आदमी लड़के और लड़कियाँ गायब हैं जिन्हें ढूंढने के लिये कई जासूस लगे हुये हैं।
हाँ, वो मैं ही हूँ मुर्दों का व्यापारी और कल फिर अखबारों में आयेगा कि पाँच आदमी और एक लड़की गायब है।
पेपरों में जरूर आयेगा कि मुर्दों का व्यापारी पकड़ा गया और उसके सभी साथी गिरफ्तार हैं।
दुनियाँ में कोई ऐसा नहीं जो हमें गिरफ्तार कर सके, हम अभी तुम्हारा नामो-निशान मिटा देंगे।
हमने जब तुम्हारी गाड़ी को जंगल की ओर जाते देखा तो हमने पुलिस को फोन कर दिया कि अगर हमारा दो घंटे तक कोई संदेश न आये तो आप अपने सिपाहियों को लेकर जंगल में बने पुराने महल में आ जाना।
इन सब को पकड़ लो और दो घंटे से पहले-पहले सारा सामान ट्रकों में डाल कर पहाड़ी के उस पार अड्डा नम्बर पाँच पर ले चलो, वहीं इनका पोस्टमार्टम करेंगे।
ये बात सुनते ही रगड़ू छलांग लगा कर अपनी दोनों टांगो से बॉस की गर्दन को पकड़ कर खुद उल्टा लटक जाता है।
एक आदमी जैसे ही माचू को पकड़ने के लिये आता है तो माचू उसको एक जोरदार घूँसा मारता है।
आह
शेष पृष्ठ ३३ पर

क्यों और कैसे

प्र० : कुछ पक्षियों के उड़ने की क्षमता के पंख क्यों नहीं होते ? या कुछ पक्षी उड़ते क्यों नहीं ?

उ० : बेकार पंखों वाले पक्षी, उड़ सकने के लिए बहुत बड़े और भारी पक्षी, या उड़ने से डरने वाले पक्षी, ऐसे पक्षियों ने बहुत समय से वैज्ञानिकों को असमंजस में डाल रखा था। ऐसे तरह-तरह के पक्षी दूर दराज के अकेले द्वीपों पर अधिक पाये जाते हैं। यदि ये पक्षी उड़ नहीं पाते थे तो वे इन दूर के निर्जन अकेले स्थानों पर पहुंचे कैसे थे और फिर उन्होंने अपनी प्राचीन परम्परा कैसे त्याग दी ?

संसार में बीसियों प्रकार के पक्षी हैं जो उड़ नहीं सकते, इनमें अधिकतर रेल परिवार के पक्षी आते हैं पर शुतुर्मुर्ग, रियास और ईमू के साथ-साथ डोडो अब न मिलने वाली एलीफेंट पक्षी भी इसी गिनती में आते हैं। बहुत से निर्जन द्वीपों पर अनेकों अब न मिलने वाले पक्षियों के अस्थि पंजर इत्यादि प्राप्त हुए हैं।

उत्तरी केरोलीना विश्वविद्यालय के जीव विज्ञेता अलान फेड्सिया का मत है 'न उड़ पाने वाले पक्षी भी कभी उड़ते थे।' उनके उड़ने की क्षमता का अंत तभी हुआ जब वे अपने निदेश्य स्थान पर पहुंच गए थे। उड़ने की शक्ति समाप्त होने का कारण भी जीवित रहने से सम्बन्ध रखता था। उन्हें इन निर्जन टापुओं पर उड़ने की आवश्यकता ही नहीं थी। किसी प्राचीन पशु इत्यादि के अभाव में ये पक्षी भी घास चरने वाले पशु ही बन गए।

साधारण पक्षियों में उड़ने के लिए प्रयुक्त हड्डियां और मांस पेशियां बहुत भारी होती हैं लगभग पक्षी के पूरे शरीर के वजन के 25 प्रतिशत वजन की। इस कारण यदि पक्षी ने इन्हें प्रयोग ही नहीं करना तो बेहतर है कि इस मेटैबोलिकली कीमती सामान को शरीर से निकाल दिया जाए।

वैज्ञानिक के अनुसार यह विकास क्रम में बदलाव का एक साफ उदाहरण है। परन्तु बदलाव में बहुत सी पीढ़ियों का समय लगा है। यह बदलाव उनके ख्याल से शीघ्र भी हो सकता था क्योंकि पक्षी के एम्बरियों में उड़ने के अंगों का विकास सबसे अंत में होता है। इसलिये अपने पूर्वजों से केवल उड़ने की शक्ति कम रखने वाले पक्षियों में केवल विकास के एक विशेष समय पर रुकने की ही बात थी।

एक प्रकार से यदि रेल पक्षी अन्डे से बाहर जल्दी निकलते तो स्वयं ही उड़ने की शक्ति का विकास न होता और ये न उड़ने वाले पक्षी बनते। वैज्ञानिक के अनुसार यह पक्षी भी और पक्षियों के समान ही बहुत प्राचीन हैं।

कुछ पक्षी इन निर्जन द्वीपों पर ऐसे भी पाये जाते हैं जो उड़ने की शक्ति रखते हैं पर उड़ने से डरते हैं। देखा गया है कि वे पृथ्वी पर कुछ खाईयों या पुलों को उड़कर पार कर लेते हैं परन्तु यदि उन्हें बड़े क्षेत्र में फैले पानी को पार करना हो तो वे कदापि नहीं उड़ते। उन्हें शायद समुद्र के ऊपर की तेज हवाओं या भीमकाय जानवरों से डर लगता है। ऐसे डरपोक पक्षियों में कुछ विशेष किस्म की चीलें और तोते इत्यादि आते हैं। न्यूगिनी में पाये जाने वाले पक्षियों में से दो तिहाई दूर तक फैले पानी पर उड़ने से डरते हैं।

प्र० : क्या चिमगादड़ के आंख होती है ?

उ० : चिमगादड़ अंधे नहीं होते जैसा कि आम विश्वास है परन्तु भूल भुलैया से निकलने में वे अपनी आंखों की अपेक्षा सोनार शक्ति का प्रयोग अधिक उपयुक्त समझते हैं।



इसके अतिरिक्त किसी जाने पहचाने उड़ने के कमरे से निकलने के लिए चिमगादड़ प्रकाश की ओर दौड़ते हैं। चाहे उन्हें उनकी सोनार शक्ति यह आभास भी करा देती है कि बाहर निकलने की राह पारदर्शी कांच से बन्द की हुई है। खोजकर्त्ता का विश्वास है कि सोनार शक्ति चिमगादड़ को गुफा से बाहर निकलने की राह ढूंढने में अधिक सहायता नहीं दे पाती परन्तु उनकी आंखें ही उन्हें धीमे से धीमे प्रकाश को देखकर बाहर निकलने की राह ढूढ़ पाने में सहायक होती हैं।

प्र० : प्रेशर कुकर में खाना शीघ्र क्यों और कैसे पकता है ?

उ० : हम सभी जानते हैं कि प्रेशर कुकर कैसे काम करता है, बेशक ! पानी और भाप और, हां प्रेशर से कुछ होता है, ठीक।

परन्तु यह सब काम कैसे करता है ?

आमतौर पर पानी 211 डिग्री फ़ेरनहीट पर उबलता है। तापमान इससे अधिक कम ही हो पाता है क्योंकि भाप बाहर निकलकर ज्यादा गर्मी को बाहर निकाल देती है। यदि उबलते पानी के किसी बर्तन को सीलबन्द कर दिया जाये तो गर्मी बाहर नहीं निकल पाती और बर्तन के भीतर प्रेशर बनना शुरू हो जाता है। यह दबाव तरल पदार्थ की सतह को नीचे को रखकर पानी के मोलीक्यूलस को टूटकर भाप बनने से रोकते हैं इस प्रकार बर्तन से बहुत कम गर्मी बेकार होती है।

इसके परिणाम स्वरूप बर्तन के भीतर पानी का तापमान 212 से कहीं अधिक हो जाता है जिससे उसके भीतर डूबा भोजन पलक झपकते ही पक कर तैयार हो जाता है।

●

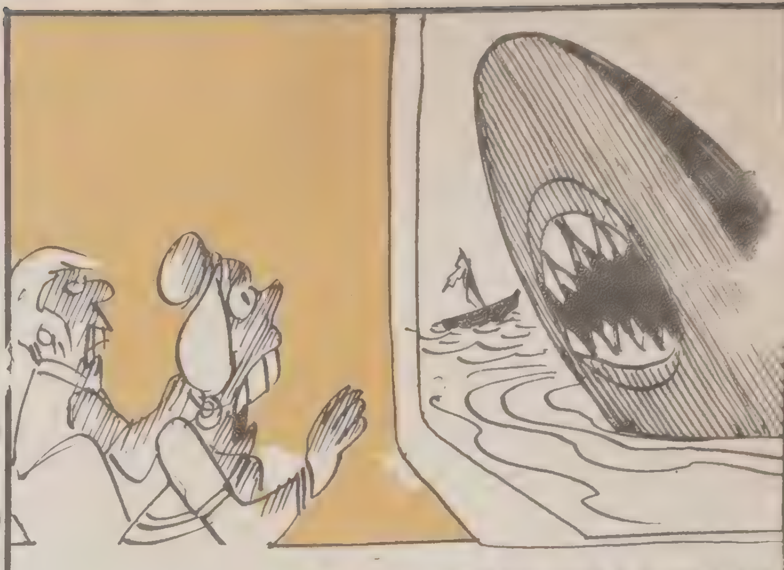
प्र० : गिरगिट रंग क्यों बदलता है ?

उ० : खतरे का आभास होने पर गिरगिट रंग बदल लेता है। छिपकली परिवार का यह एक ऐसा सदस्य है जो खतरा महसूस होने पर आसपास के वातावरण जैसा ही अपना रंग कर लेता है यदि वह शरीर का रंग पूरी तरह से आस पास के वातावरण में नहीं मिला पाता तो भी वह अपने को ऐसे रंग का कर लेता है कि उसे पहचाना न जा सके। गिरगिट की भिन्न-भिन्न जातियों के शरीर के नमूने और रंग काफी अलग-अलग किस्म के होते हैं। परन्तु अधिकतर गिरगिट पीले, हरे, क्रीम कलर के और भूरे रंग के हो सकते हैं वे अपने शरीर पर जमीन जैसे हल्के या गाढ़े रंग के धब्बे भी उभार लेते हैं।

खतरे के अतिरिक्त गिरगिट रोशनी और तापमान के अनुसार भी रंग बदलते हैं। गिरगिट के शरीर का यह मकेनिजम नरवस सिस्टम के नियन्त्रण में होता है इससे जीव के शरीर के रंगीन पिगमैंट का फैलाव या एकत्रित होना नियन्त्रित किया जाता है। प्रकृति में केवल गिरगिट ही एक ऐसा जीव है जो खतरे से स्वयं की रक्षा करने के लिये तुरन्त अपना रंग बदल वातावरण में समा जाता है।

छुट्टी की छुट्टी कैसे करें?

जी हां–प्रायः गर्मियों में आप पाते हैं कि घर वाले किसी हिलस्टेशन ले चलने की जिद कर रहे हैं और आप जाना नहीं चाहते किसी कारणवश (जैसे पैसे की तंगी है)–सवाल यह उठता है घर वालों (ऐसे में बीवी-बच्चों) के दिमाग से हिल स्टेशन या सी स्टेशन का भूत कैसे उतारें–कुछ हमारे फार्मूले प्रयोग में लाकर देखें–



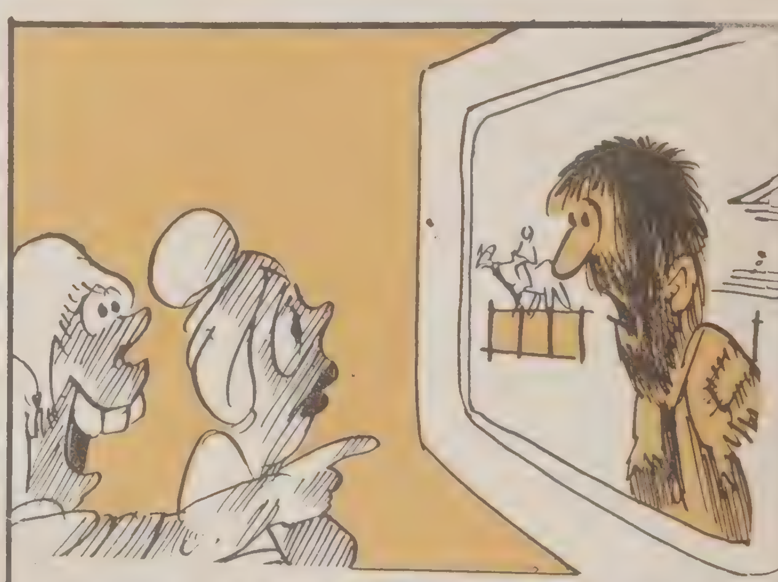
गोवा

बीवी-बच्चे गोवा जाने की जिद् कर रहे हैं तो उन्हें वहां शार्क मछलियां होती हैं और उसके बाद उनको फिल्म जॉज (JAWS) दिखायें—वह दोबारा कभी गोवा भी नहीं लेंगे।



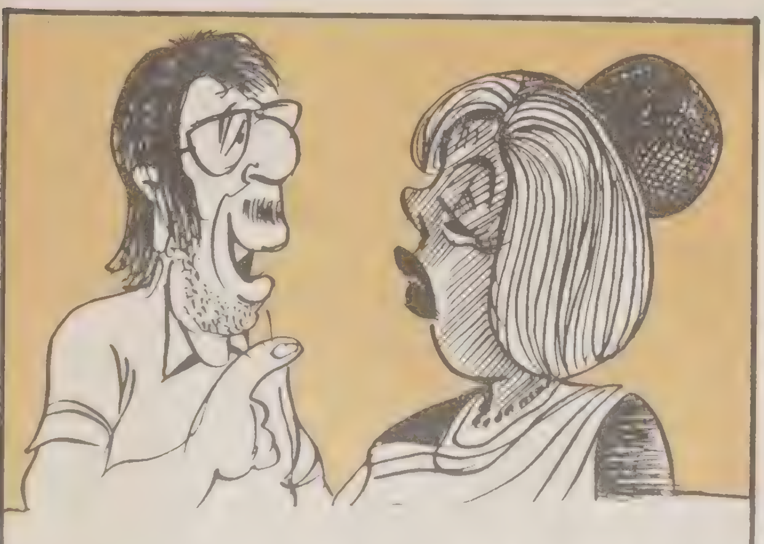
श्रीनगर

श्रीनगर में मच्छर बहुत होते हैं। बीवी-बच्चों को वह कॉमिक्स पढने को दें जिनमें मच्छर बोइंग जैट जितने बड़े आकार के होकर उत्पात मचाते हैं।



दार्जिलिंग

दार्जिलिंग में घुड़-दौड़ होती है, आप कहें कि वहां जाकर आप रेस जरूर खेलेंगे और फिर घर वालों को ऐसी फिल्म दिखायें जिसमें कोई रेस खेल कर बर्बाद होता दिखाया गया हो।



डलहोजी

आप कहें, ठीक है डलहौजी चलते हैं, क्योंकि सारे रिटायर्ड बुड्ढे-खुड्डे और अधेड़ उम्र के आदमी वहीं तो जाते हैं। आपकी पत्नी फौरन डलहौजी जाने से मुकर जाएगी। कोई स्त्री स्वयं को बूढ़ी या अधेड़ नहीं दर्शाना चाहती।



शिमला

घर वालों की जिद् शिमला जाने की है तो आप खुशी से नाचना शुरू करें और बतायें वहां शराब सस्ती है, मजा आएगा। घर वाले शिमला जाने का प्रोग्राम रद्द कर देंगे।



नैनीताल

अपने दोस्त को पट्टी पढ़ायें जो आपके घर आकर कहे कि नैनीताल झील में जहरीली घास उग रही है। जो आदमी को अंधा कर देती है। शरीर से छू जाये तो कोढ़ फूटता है। फिर देखो घर वाले कैसे नैनीताल जाने की जिद्द बरकरार रखते हैं।



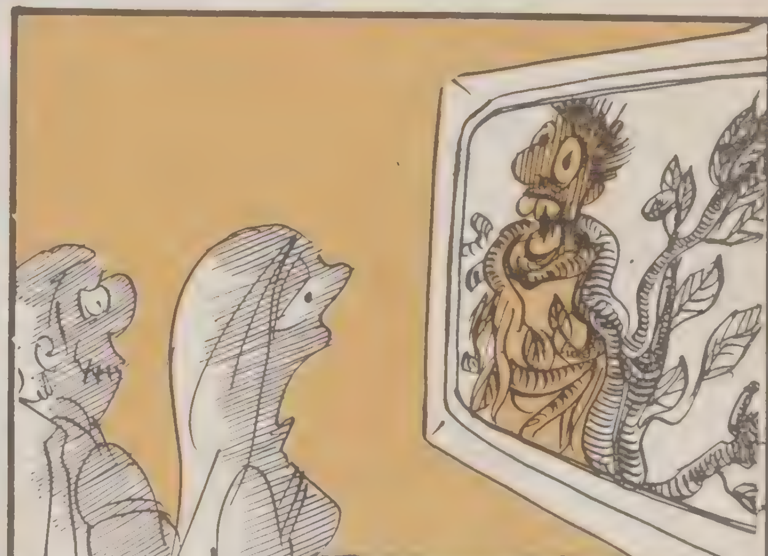
खिलन मर्ग

घर वाले ऐसी जगह जाना चाहते हैं जहां स्कीइंग होती ही· तो उन्हें फिल्म एक फूल दो माली दिखायें जिसमें पर्वतारोही स्कीयर संजय दुर्घटना का शिकार होता है।



लद्दाख

लद्दाख के लिए श्रीनगर से वायुसेवा है। घर वालों को वही फिल्में दिखाते रहें जिनमें वायुयान दुर्घटना हो। वायुयान दुर्घटना की खबरें अखबारों से जानबूझ कर जोर से पढ़ें।



ऊटी

ऊटी में बॉटेनिकल गार्डन है। घर वालों को हॉरर मूवी दिखायें जिनमें अफ्रीका के नरभक्षी पौधे मनुष्यों को मारते दिखाए गए हों। घर वालों के कान में यह बात डाल दें कि ऊटी में भी गार्डन में नरभक्षी पौधे लगाये गये हैं।



मसूरी

मसूरी में बन्दर बहुत होते हैं। परिवार वालों को किंगकांग फिल्म दिखायें। यह भी बतायें कि बन्दर एक जड़ी गलती से खा जाये तो किंगकांग बनता है। एक बार मसूरी में भी किंगकांग का हमला हुआ था।



अल्मोड़ा

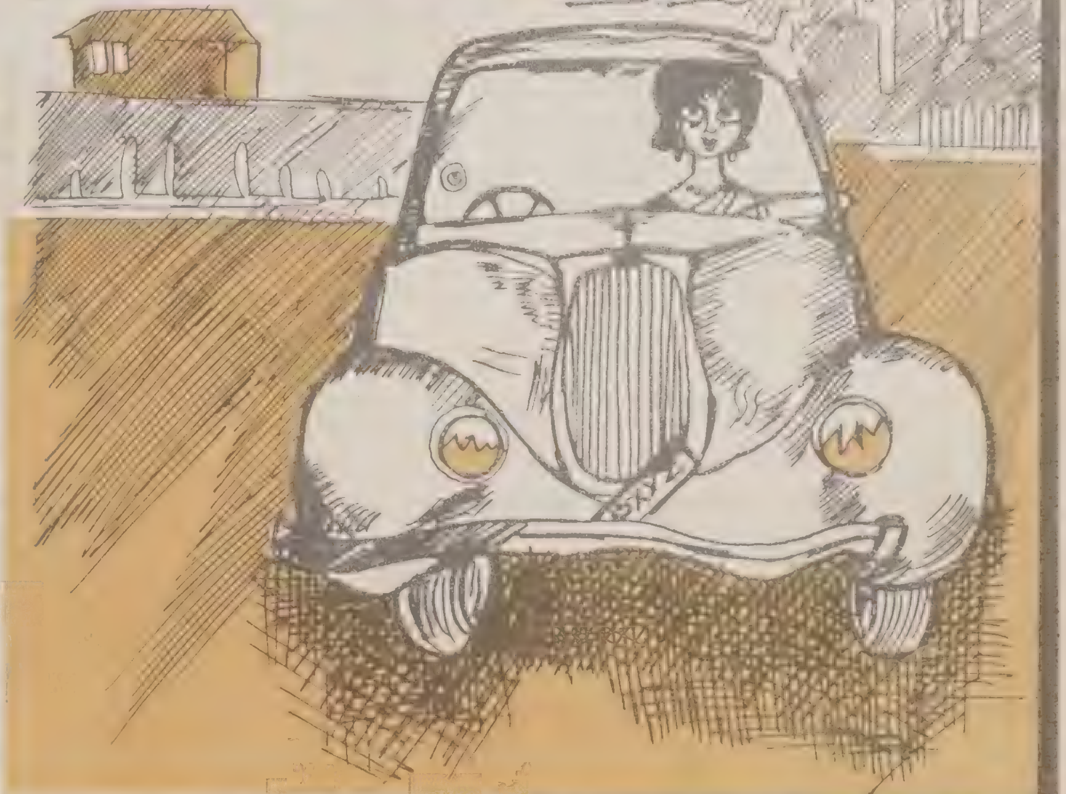
अगर बीवी-बच्चे कुमाऊं साइड में जाना चाहते हैं तो वहां के नरभक्षी चीतों की कहानियों की किताबें पढ़ने को दें। इसके बाद रानीखेत के नाम से उनके रौंगटे खड़े हो जायेंगे।


भाई जो दीवाना के पाठकों को यह खुशखबरी सुना ही दें कि हम इस गर्मियों में काश्मीर जा रहे हैं। बेचारे अपने ही याड़ी हैं। म्हारी ठंडी बातें सुन कर इनका भी कलेजा ठंडा हो जायेगा।
यह भी बता दें कि म्हारी सारी बुकिंग हडवांस में हो चुकी है। कोई फिक्र करने की बात नहीं से, सब मामला टिच बटन है।
इस बार म्हारे याड़ो बाई एयर
रहे हैं। मुझे यह अपने कोट
अन्दर वाली जेब में ले जायगा।
गर्मियों में थमको भी किसी हिल स्टेशन पर जाना चाहिए था। क्या हुआ पैसे नहीं थे तो हमसे उधार मांग लिया होता। चला कोई बात नहीं है। अगली बार देखेंगे।
हवाई जहाज से सफर करने में यही तो मजा है। खराब हो जाये तो उतर कर धक्का नहीं लगाना पड़ता।
हौर याड़ो हवाई जहाज में ऐयर होस्टेस बहन जी भी होती हैं। मैं तो हवाई जहाज को जीजा जी की कोठी ही मानता हूं।
खबरदार कोई अपनी जगह से हिलया तो मैं यह फौजी गरनेड फेंक कर हवाई जहाज को यात्रियों समेत उड़ा दूंगा। ऐ जहाज हुन श्रीनगर नहीं जाएगा। यह लाहौर जाएगा। इसको मैं और मेरे साथी हाईजैक कर रहे हैं। मेरे साथी पायलट के कैबिन में घुस गये हैं।
ओह गॉड हाईजैकर
जब तक सरकार हमारी मांगें नहीं मान लेती हम जहाज और मुसाफिरों को बधक बना कर रखेंगे।
शsss। इसको न बताना कि मशहूर सिलबिल इसी जहाज में सफर कर रहा है।
साईलेंट।
बेचारे को पता लगा तो डर के मारे ही ग्रेनेड हाथ से छूट जायेगा और फट सकता है। इस बेचारे की किस्मत खराब थी। वही जहाज हाईजैक करने लगा जिसमें मैं बैठया हूं। हा हा हा हा हा हा।
ओये खरबूजे, तू हंस क्यों रहा है? देखता है मेरे पास खंजर भी है।
तेरे पेट विच पाड़ देयांगा।
तुमने कॉमिक्स में मैन्ड्रक का जादू देखा होगा। अब सेन्ड्रक का कमाल देख।


यह मेंने हाथ से जादुई इशारा किया और तेरे हाथ में जो ग्रेनेड था वह हरा प्याज बन गया। इसको मक्की की रोटी और साग के साथ काट कर खाना।
ऐ की हो गया ओये मक्खन सिंह ?
और तुम्हारे हाथ में जो खंजर था वह मेरे हाथ का जादुई इशारा पाते ही चाकलेट आइसक्रीम बन गया। इसको डंडी से पकड़ जल्दी-जल्दी खा ले और लाहौर जाने का सपना छोड़ दे।
मैंनू जकीन नहीं आंदा. मैं किते सुपना तो नहीं देख रेया ? चूंडी भाड के देखां।
क्या समझे ? तुम सोच रहे थे सिलबिल अपना उल्लू बना रिया है। क्यों ? अभी तो थमको मैं होर तमाशा दिखाऊंगा तब मान जाओगे कि सिलबिल भी कोई चीज है।
तुम इधर देख रहे हो, यह इस हवाई जहाज की एयर होस्टेस बहन जी मारिया जाजाबेल है।...हां तो बच्चों ताली बजाओ।
मेन्ड्रेक जादूगर तो सिर्फ हाथ से जादुई इशारे करता है मैं हाथों के साथ अपने पैर से भी जादुई इशारे कर सकता हूं। जादू के इम्तहान में मुझे इस कमाल के दस नम्बर फालतू मिले थे।
और मारिया जाजाबेल एक चिड़िया बन गयी। मैं इसे घर ले जाकर रखूंगा—दिन को लड़की बनाऊंगा और रात को चिड़िया बना कर रखूंगा।
बेवकूफ दिन को चिड़िया और रात को लड़की बनाना।
मिस्टर सिलबिल मे आई कांग्रेचुलेट एण्ड थैंक यू आन बिहाफ ऑफ दि क्रू एण्ड पैसेन्जर्स आफ दिस प्लेन। आपने ऐन मौके पर हम सबकी रक्षा की। आप न होते तो हम सब इस वक्त न जाने किन परेशानियों में होते।
यह तो मेरा फर्ज था।
सर टॉरमैक पर बी. एस. एफ. और सेना की टुकड़ी आपको गार्ड ऑफ आनर पेश करने के लिए खड़े हैं। आपको गार्ड आफ आनर के प्रोटोकोल का तो पता हो होगा। दिल्ली में टी. वी. पर देखा होगा।
चीफ मिनिस्टर साहब, आपने आने की तकलीफ क्यों की ? आप तकल्लुफ में पड़ गये।
आप हमारे स्टेट गेस्ट हैं—अब आप मामूली जासूस नहीं रहे। वी. वी. आई. पी. बन गये हैं।


मैं जम्मू और काश्मीर के लोगों और सरकार की तरफ से जनाब सिलबिल साहब को तहेदिल से शुक्रिया करता हूं। उन्होंने यहां आकर इस सीज़न की शान को चार चांद लगा दिए हैं। और उन्होंने जहाज का हाईजैक होने से बचा कर मारे मुल्क को एक और मुसीबत में पड़ने से बचा लिया। हमारी सरकार जनाब सिलबिल साहब की छुट्टियां यादगार लायक बनाने की कोशिश करेगी।
अगर मुझे पता होता कि यहां मुझे इतना प्यार मिलेगा तो मैं अपने साथ तौलियों का पूरा सैट ले आता। मैं गदगद हो जाता हूं तो मेरी आंखों में खुशी के आंसुओं की बाढ़ आ जाती है।
ऐ टोस्ट टू मिस्टर सिलबिल हैल्थ एंड प्रास्पैरिटी।
जम्मू काश्मीर की पब्लिक और फारूख साहब की सेहत का जाम।
याडी, मेरे से जलना मत, क्योंकि मेरी जीत में थमारी भी जीत है।
पता है, सरकारी आर्डर है कि जिस हाऊस बोट में जनाब सिलबिल रिहाइश कर रहे हैं उसकी सिक्योरिटी का पूरा टाप आर्डर इन्तजाम रखना है और टूरिस्ट डिपार्टमैंट को ताकीद कर दो कि इनके आराम की सारी चीजें मुहैय्या हों।
यस सर।
भाई जो इस हाऊस बोट में मुझे बोत डर लग रिया है। अगर यह रात को उलट जाए तो क्या होगा? हमने वह पिक्चर देखी थी न पासीडान एडवेंचर।
नहीं उलटती भाई, तू फिक्र न कर। स्टेट डिनर में तू शैम्पेन ज्यादा पी गया। पहली बार मुफ्त की पीने को मिली न। तेरा दिमाग उलट गया है। बस और कुछ नहीं।
मैं छत पर कैसे लेटा हूं?
जनाब गजब हो गया। हाऊस बोट उलट गई है। जल्दी बिस्तर से बाहर निकलिए। बहुत बड़ा हादसा होने वाला है।
शार्क?
हमारी कहानी तो टू-इन-वन हो गई। पासीडान एडवेंचर और जाज।
हम पानी में हैं लेकिन हमारा दम नहीं घुट रहा है। हम जल थल दोनों जगह रहने वाले जीव तो नहीं बन गये?
पहले तो हमें इस शार्क से निबटना है।
अगले अंक में पढ़िये
सिलबिल पिलपिल की शार्क से दिल दहला देने वाली खूरेज लड़ाई।

दुर्घटना



जॉन पॉल का आज एक अच्छा दिन बीता था। छोटे शहरों के डाक्टर और दवाफरोश अच्छा धन्धा कर रहे थे ऐसा ही पाल दवाफरोश भी कर रहा था। पर आज का दिन बहुत ही लम्बा दिन रहा था। इस समय रात के ग्यारह बज रहे थे पाल शहर की बाहरी सड़क पर तेजी से जा रहा था उसकी इच्छा आधी रात से पहले ही घर पहुंचने की थी।

वह थका हुआ था, साथ ही उसे नींद भी आ रही थी वह आधे घंटे और जागे रहने के प्रयास में लगा था, परन्तु वह ऊंघ बिलकुल नहीं रहा था। उसका अपनी कार पर पूरा नियन्त्रण था, उसे बिलकुल ठीक से मालूम था, वह क्या कर रहा था।

वह कई मोटरों के करीब से गुजरा था। परन्तु इस समय सड़क बिलकुल निर्जन थी, इसी कारण वह इस विशेष सड़कपर आया था, भीड़-भाड़ कम और यही हाल था सड़क का जब कि उसने दूसरी कार देखी।

सबसे पहले उसे केवल दो बत्तियों से ही इसका आभास हुआ जो कि करीब चौथाई मील की दूरी पर एक मोड़ से दिखाई दे रही थीं। बत्तियां बेहद तेजी से चमक रही थीं और ड्राईवर ने उन्हें हल्का करने की कोई कोशिश नहीं की। पाल ने मन ही मन उसे कोसा और अपनी कार की बत्तियों को डिम किया परन्तु हैरानी की बात यह थी फिर भी सामने वाले ने कोई ध्यान न दिया और कार की बत्तियां उसी तेजी से चमकती आगे बढ़ती रहीं। उसने दोबारा गाली दी और गुस्से में भर कर अपनी कार की बत्तियां फिर से पूरी तेज कर दी। परन्तु अब तक उसके मन में किसी प्रकार का खतरा महसूस नहीं हुआ था।

दूसरी कार के तीव्र गति से अपने ओर बढ़ने का उसके मन में कुछ-कुछ आभास सा हो रहा था, ऐसी सड़क के लिए जिस पर वे लोग इस समय थे। कार की गति बहुत ही ज्यादा तेज थी। यन्त्रवत उसने एक्सीलेटर को ढीला कर दिया और सड़क पर अपनी दिशा में रहने पर पूरा ध्यान केन्द्रित कर सामने से आनी बत्तियों को नजरन्दाज किया।

परन्तु उसे यह बहुत देर से पता चला कि दूसरी कार सड़क के बीच का फासला कम किए जा रही है और उसे अपना निर्णय अति शीघ्र लेना होगा कि वह हार्न पर हाथ रखे सीधा आगे बढ़ता जाए, इस आशा में कि दूसरी कार का चालक कार को एक ओर कर लेगा या अपनी साईड पर प्रहार ले मिट्टी धूल पर गिर बचने की उम्मीद करे।

उसने दूसरा रास्ता अपनाया, परंतु यह भी समय रहते नहीं। उसने देखा कि दूसरी कार एक इंच भी दूसरी ओर हटने वाली नहीं है; इसलिए उसने एकदम से दाईं ओर काटा टक्कर उसके पीछे के पहिये और बम्पर पर लगी, कार का पीछे का भाग साईड के खड्डे की ओर फिसला और तब अचानक ही कार जैसे गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो हवा में ऊपर उठ गई। इस क्रिया में ही पाल कार के बाहर फेंक दिया गया।

उसने मशीन के गिरने का शब्द न सुना, न ही कुछ देखा, उसकी अपनी सारी चेतना उसके शरीर पर पहाड़ से टकराव के धक्के में केन्द्रित थी, चट्टान ने उसके शरीर का एक ठोस दीवार का रूप धारण कर स्वागत किया था फिर वह मिट्टी और कंकरों के साथ पहाड़ी से नीचे फिसला, बाद में वह स्थिर पड़ा रहा और उसी प्रकार हो गई उसके आस-पास की सारी दुनिया।

उस पहले एक क्षण में उसे कोई तकलीफ महसूस नहीं हुई, धक्के से उसकी चेतना सुन्न हो गई थी, परन्तु उसे मालूम था वह जीवित है, उसे यह भी पता था कि वह किसी तरह होश में है, साथ ही उसे एक दूर का सा आभास था कि उसका शरीर टूट गया है और रक्त बहना आरम्भ हो गया है।

अन्धा कर देने वाली बत्तियां चली गईं थीं, वह घास के एक टुकड़े पर कमर के बल पड़ा था। उसके ऊपर तारे और पूरा चमकता चांद था। उसे चांद तारे आज अपने इतने करीब लग रहे थे जैसे पहले कभी नहीं लगे थे। शायद नजर के इसी धोखे के कारण उसने समझ लिया था वह मर जायेगा।

उस क्षण उसे इस पर गुस्सा भी नहीं महसूस हुआ, उसे टक्कर लगने से पहले अपने गुस्से की याद थी पर वह तो बहुत दूर की नकली बात थी। फिर से मौत की बात उसके दिमाग में चक्कर लगा गई। मरते हुए लोगों के मन में दूसरे जीवों के प्रति कोई भाव नहीं होते, वह पूरी तरह स्वयं में ही खो जाते हैं।

तब उसे आवाजें सुनाई दीं, संसार के साथ सम्बन्धों का फिर से मेल हुआ। उस दूसरी कार में भी लोग थे वह उनके विषय में सोचने लगा बिना किसी गुस्से या दयाभाव के, परन्तु उसने अपना पूरा ध्यान सुनने पर केन्द्रित किया।

'वह यहां नहीं है' एक जवान से छोकरे की आवाज। दूसरी कार पर भी टक्कर तो लगी ही थी उस कार को भी रोक लिया गया था शायद चालक न रोके जाये बिना रुक गया था। कुछ भी हो, दूसरी कार के लोग, जो भी थे, उतर कर उसकी कार के पास पहुंच उसे ढूंढ़ रहे थे।

उसकी मदद करने को? उसकी सबसे पहली इच्छा पुकार कर उन्हें अपने पास बुलाने की हुई। सड़क पर चलते समय वे लोग स्वार्थी थे पर अब वे दयालु हो, उसकी मदद करना चाहते थे, पर तभी पहली भावना के विपरीत भावना उसके भीतर जाग्रत हुई। क्या वे वास्तव में सहायक होंगे? और तब वह अचानक आतंकित हो उठा, पता नहीं क्यों? बेशक सभी दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करते हैं। क्यों, करते हैं न?

'वह बाहर गिर गया होगा', एक लड़की का डरा सा स्वर सुनाई दिया।

'मेरे ख्याल से, अब हम क्या करें?' वही मरदाना स्वर।

तो वो केवल दो ही हैं।

'उसे ढूंढ़ते' हैं' लड़की बोली।

एक हिचकिचाहट, 'क्यों?'

एक और हिचकिचाहट 'क्या तुम जानना नहीं चाहते उसे क्या हुआ...या यदि स्त्री थी तो भी, क्या हुआ?'

'मुझे नहीं मालूम, मरदाना स्वर कांपा... मुझे नहीं मालूम...।'

'मेरे ख्याल से हमें चारों ओर देख उसे ढूंढ़ लेना चाहिये।'

'ठीक है...पर अंधेरा है।'

'तुम्हारे पास फ्लैशलाईट है, है न?'

'हां...मैं लेकर आता हूं।'

सड़क पर कदमों की आहट, लड़का फ्लैशलाईट के लिए, अपनी कार तक वापिस गया और फिर 'दोबारा चुप्पी।'

पाल एक नए भय से घिरा, प्रतीक्षा करता रहा। उसे उन आवाजों की गूंज भायी नहीं थी, वह लड़का और लड़की ऐसे लोग नहीं थे जो परवाह करेंगे। यदि वह मर रहा होगा, तो वे ऐसे लोग नहीं थे जो कुछ ज्यादा सहायता करेंगे।

यदि वह मर रहा होगा? उसे इसका विश्वास हो गया था। दर्द अब आरंभ हो गया था, इसे वह कई स्थानों पर महसूस कर रहा था। उसके चेहरे पर, उसके सीने में और उसकी दोनों टांगों में और उसके भीतर, जहां डाक्टर के अतिरिक्त कोई नहीं पहुंच सकता था। इस क्षेत्र के दर्द ने ही उसे मौत का विश्वास दिला दिया था।

फिर क्या फर्क पड़ता था? वे उसे अपनी फ्लैशलाईट से ढूंढ़ लें या न ढूंढ़ पायें?

'अच्छा मैं फ्लैशलाईट ले आया हूं' लड़के का स्वर।

'हम कहां ढूंढ़ें?'

'मेरे ख्याल से गड्ढे में।'

खिसकता पदचाप रोड़ी पत्थर और घास फूस इत्यादि के ऊपर, फिर एक जलती बुझती



लाईट, आगे पीछे जाती हुई। प्रकाश और पदचाप दोनों करीब आते हुए। बेशक वे उसे ढूंढ़ ही लेंगे। वह उन्हें पुकार कर खोज को शीघ्र समाप्त कर सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया, उसने प्रतीक्षा की।'

'हे।'

प्रकाश उसके चेहरे पर पड़ रहा था सुन्न होने के कारण, वह उससे अपना चेहरा घुमाता भी प्रतीत नहीं हुआ। कदम तेजी से बढ़े, और वे पहुंच गये थे। दो आकृतियां उसके ऊपर आकाश के विपरीत खड़ी थीं। प्रकाश उसकी आंखों में चमक रहा था, उसने आंखें मिचकाईं, परन्तु उन्हें महसूस होता प्रतीत हुआ कि लाईट से उसे परेशानी हो रही थी।

'वह जीवित है' लड़की 'उसकी आंखें खुली हैं।'

'हां मैं देख रही हूं...।'

'पर उसे चोट लगी है' लड़की की आकृति उसके करीब झुक गई, जिसके कारण उसका फ्लैशलाईट से बचाव हुआ। चन्द्रमा के तेज प्रकाश के कारण वह लड़की का चेहरा देख पा रहा था।

वह जवान थी बेहद जवान, शायद सिर्फ सोलह वर्ष की। वह सुन्दर भी थी, उसके बाल काले थे, रंग पीला सा था शायद असाधारण सा पीला था, उसका बना हुआ मुंह इससे बिलकुल विपरीत दिख रहा था। परन्तु उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, शायद वह घबरा गई थी। परन्तु उसकी आंखें उसके घावों पर से घूमीं फिर भी कोई दया का भाव उसकी आंखों में नहीं उभरा।

'तुम्हें काफी बुरी तरह चोटें लगी हैं, है न? प्रश्न उससे ही पूछा जा रहा था।

'हां......' उसने महसूस किया कि वह ज्यादा तकलीफ के बिना बोल पा रहा है।

'कहां? मालूम है तुम्हें?'

मेरे ख्याल से, सारे में, खास कर अन्दर।'

उसके उत्तर पर लड़की सोचने लगी। उसका दूसरा प्रश्न नपातुला और भाव शून्य था 'क्या तुम समझते हो अगर हम मदद ले आयें तो तुम बच जाओगे?'

उसने भी सोचा, स्वयं को उत्तर देने से पहले कुछ समय दिया। पर फिर भी उसने गलती कर दी, 'मेरे ख्याल से मैं मर जाऊंगा', 'वह बोला, बोलते ही उसे मालूम हो गया था उसने गलती की है।

लड़की का चेहरा अचानक कुछ बदल गया। पाल को बदलाव दिख नहीं रहा था, पर पता चला गया था ऐसा हुआ है, वह एक दम से उससे दूर हटी और उठ कर लड़के के करीब चली गई।

'वह मर जायेगा' वह बोला, मानो उसे भी पाल के समान इस बात का पूरा निश्चय हो चुका था।

'फिर तो डाक्टर ढूंढ़ने से कोई फायदा नहीं है न?' लड़के के स्वर में राहत थी मानो उसे इस सबके भार से मुक्ति प्राप्त हो गई हो।

शेष पृष्ठ ४२ पर

पृष्ठ २४ से आगे


दूसरा आदमी जैसे ही डा० बोलोराम को पकड़ने आता है तो डा० बोलोराम अपने औज़ार से उसकी बन्दूक वाली बाजू ही काट देता है।
कोई बात नहीं बन्दूक दूसरे हाथ से उठा लो।
पीचू वहाँ से गायब होकर मिस कटर और नासपीटे को ढूंढ़ कर उनकी रस्सियाँ खोल देता है।
माचू, पीचू, रगड़ू, डा० बोलोराम, नासपीटा और मिस कटर सभी वहाँ जम कर लड़ाई लड़ते हैं।
आखिर में बदमाश उन सभी को पकड़ लेते हैं परन्तु इसी मारधाड़ के दौरान मिस कटर वहाँ से भाग जाती है।
मिस कटर को गायब देखकर एक आदमी अपने बॉस से कहता है –
हज़ूर वो लड़की गायब है।
उसे दफा करो, इन्हें और सामान को ट्रकों में डाल कर अड्डा नम्बर पाँच पर ले चलो।
इधर मिस कटर भागती हुई एक टैलीफोन बूथ पर आती है और पुलिस को फोन करती है क्यूँकि वो जानती है कि रगड़ू ने झूठ बोला है कि पुलिस दो घंटे बाद आयेगी इसलिये वो पुलिस को खुद फोन करती है।
हैलो इंस्पेक्टर मैं मिस कटर बोल रही हूँ। हमने मुर्दों के व्यापारी को पकड़ लिया है। वो हमारे पाँचों आदमियों को पकड़ कर, पहाड़ी के दूसरी ओर झील के पास बंगले में ले गये हैं। मेरे ख्याल से वही उनका अड्डा नम्बर पाँच है और वो सब वहीं गये हैं।



हम तुम्हारे पास पहुँच रहे हैं और वो बंगला एक बहुत बड़े नेता का है इसलिये हम बिना कारण हाथ नहीं डाल रहे थे हम अभी आपको साथ लेकर अड्डा नम्बर पाँच पर जायेंगे।
आप जल्दी अपनी फोर्स के साथ आयें मैं इसी टैलीफोन बूथ के बाहर आपको मिलूंगी।
पुलीस चारों तरफ से बंगले को घेर लेती है और मुर्दों के व्यापारी को अरेस्ट कर लेती है।
इतनी देर में एक सिपाही इंस्पेक्टर से आकर कहता है -
सर अन्दर तो हीरे जवाहरात, सोने के बिस्कुट और काफी स्मगलिंग का सामान पड़ा हुआ है।
सारे सामान को भी अपने साथ ले चलो।
दूसरे दिन अखबार में आता है -
तेज
साप्ताहिक
मुर्दों का व्यापारी पकड़ा गया जो नेताजी की कोठी का नाजायज इस्तेमाल कर रहा था क्योंकि नेताजी कई-कई साल उस बंगले में जाते ही नहीं।
ये लीजिये तुम्हारा सवा लाख का इनाम, हमें आशा है आप यूँ ही अपनी जान की बाजी लगा कर अपराधियों को पकड़वाते रहेंगे।
चलो कुछ दिन तो बिना काम के कट सकेंगे।
समाप्त

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
चटपटे उत्तर काका हाथरसी के—



राजवीर सिंह दीवाना—मुजफ्फर नगर
प्र० : राजनारायण ने चरणसिंह से कुट्टी कर दी थी. अब फिर हाथ बढ़ा रहे हैं, जुड़ जायेगी क्या ?
उ० : टूट-फूट के भेद को, जानत हैं सब कोय,
टूटी रस्सी जुड़े तो, गांठ-गंठीली होय।

केवल प्रकाश—लौकी, काशीपुर (उ.प्र.)
प्र० : दुर्भाग्य से पीछा छुड़ाना चाहता हूं ?
उ० : बस अपना कुछ भी नहीं, राग करो या त्याग,
पीछे-पीछे भागते, भाग्य और दुर्भाग्य।

शाहिद अहमद—गजनेर रोड, बीकानेर
प्र० : मेरे घर में एक तोता है. कुछ बोलता नहीं, क्या करें ?
उ० : एक लड़ाकू सुंदरी, तोती रख दो साथ,
मौन तोड़ तोता मियां, चहकेंगे दिनरात।

प्रहलाद प्रसाद—गररवा, (छपरा)
प्र० : जिन्दगी पावर हाउस है. दिल का धड़कन करैन्ट तो आंखें क्या हैं ?
उ० : धड़कन में कितना छिपा, उस करंट को आंक,
पावर जितने वाट की, उतनी चमकें आंख।

एस. मंजूर हसन कादरी—बीकानेर
प्र० : किसी को दाल आटे का भाव कब मालुम होता है ?
उ० : दाल ला, दलिया ला, लहंगा ला, फरिया ला,
लाली का ला-ला सुन, लाला घबराय गए।

किशोरी रमण जैसवाल—अलीगढ़
प्र० : काकाजी, मध्य प्रदेश में, दाल-बाफला प्रसिद्ध है हमारी तरफ दाल बाटी, इनमें फर्क क्या है ?
उ० : बाटी होती सख्त कुछ, नरम बाफला जान,
क्वारी-ब्याही प्रेमिका, अनुभव से पहिचान।

अघारिया रजबअली—जोगेश्वरी, बंबई
प्र० : पहलवानों में अक्ल की कमी क्यों होती है ?
उ० : शारीरिक व्यायाम से, काया बने कठोर,
काम न लें जिस अंग से, होगा वह कमजोर।

विनोद साहनी—बरेली (उ०प्र०)
प्र० : फूल की खुशबू से दिल मचल उठता है, तो सुन्दर लड़की की खुशबू से ?
उ० : कलियां खिलीं गुलाब की, महक उठे स्वर-सांस,
दुलहिन को पाकर दुल्हा, उछले नौ-नौ बांस।

महेन्द्र प्रसाद—मुगलसराय
प्र० : आप किस हीरोइन को पसंद करते हैं और काकी कौन से हीरो को चाहती हैं ?
उ० : हम हीरो, वे हीरोइन, लेते हैं आनंद,
काकी हमें पसंद है, काका उन्हें पसंद।

मनोज कुमार, गनमास्टर—सुलतानपुर
प्र० : हम किसी से कम नहीं तो आप ?
उ० : आप विशाल-महान हैं, हम हैं सबसे कम,
नष्ट हिमालय को करे, छोटा सा अणुबम।

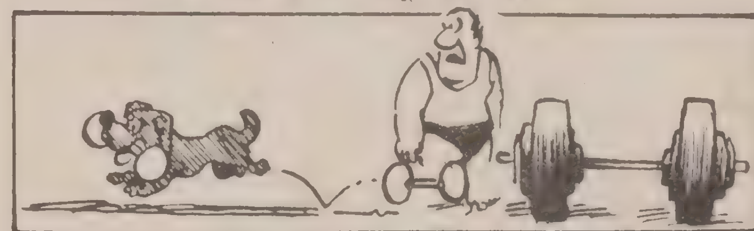
अब्दुल गफूर कव्वाल, मेरठ
प्र० : काकी का एक फोटो हमको भेज दीजिए, कीमत जो भी हो ले लीजिए।
उ० : फोटो भेजें आपको, लगता हमको डर,
डोरे डालोगे मियां, लिखकर लव लैटर।

संजय कुमार त्यागी, ढालीपुर (देहरादून)
प्र० : काका, अपनी दाढ़ी का एक बाल भेज दीजिए मैं तावीज बनवाऊंगा ?
उ० : पोती-पोतों का हुआ, दाढ़ी पर अधिकार,
एक बाल का मूल्य है, रुपया एक हजार।

अमरनाथ शर्मा—काठमांडू (नेपाल)
प्र० : आपने दाढ़ी क्यों रखी है, दाढ़ी वाले अक्सर डाकू जैसे लगते हैं ?
उ० : दाढ़ी का सम्मान क्या, देख लीजिए आज,
जैल सिंह हैं राष्ट्रपति, भारत के सरताज।

सुधीर कुमार ठाकुर, लोहना (नेपाल)
प्र० : आपके कारतूसों से छर्रा ही क्यों निकलते हैं, गोली क्यों नहीं ?
उ० : गोली छूटे इधर से, निकल जाय उस पार,
अंग अंग छर्रा छिदें, करें व्यंग बौछार।

आलोक ए. पी. खोरा बाजार—कानपुर
प्र० : मेरी शादी की बातचीत एक लड़की से चल रही है बहुत सुन्दर है, लेकिन उसकी एक आंख कानी है।
उ० : जरा खोटी भी हो तो क्या, खरी मालूम होती है,
जवानी में गधैया भी परी मालूम होती है।



बैनी गोपल राजोरिया, अजमेर
प्र० : यदि आपको फिर से शादी करनी पड़े तो कैसी वाइफ पसंद करेंगे ?
उ० : वो पतली हो, या छोटी हो, भले छोटी सी गुडिया हो,
कमाऊ चाहिए पत्नी, जवां हो अथवा बुढ़िया हो।

कुलदीप कुमार उटपल—**मुरादाबाद**
प्र० : हमारा मन, हमेशा उदास रहता है, क्या करें ?
उ० : 'दीवाना' मंगवाइए-हास्य व्यंग भरपूर,
काका की कविता पढ़ो, होय उदासीदूर।

अनुरोध प्रसाद सिंह—अम्बाला कैन्ट
प्र० : इंदिराजी, जल्दी जल्दी मंत्रियों में काट छांट क्यों करती रहती हैं ?
उ० : बहुत समय तक ले चुके, तुम सत्ता का स्वाद,
किसी और को कुछ दिनों, चखने दो परसाद।

बसंत कुमार 'बंसत' लश्कर—ग्वालियर
प्र० : कत्ल करने वाले कातिल डाकू फूलन के साथ, ग्वालियर जेल में ए. क्लास के मजे ले रहे हैं कहां गया न्याय ?
उ० : उल्टी माला जप रहे, न्याय और ईमान,
पापी जितना बड़ा हो, उतना बने महान।

काका के कारतूस
दीवाना पाक्षिक, ८ बी, बहादुशाह जफ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.

खेल खेल में

पांचवीं महिला विश्व-कप हाकी प्रतियोगिता भारतीय टीम में दमखम का अभाव

—नवीन चंद

एशियाड विजेता बनने के फलस्वरूप भारतीय महिला-हाकी खिलाड़ियों से बेहतर खेल व परिणाम की आशा थी। साथ ही उन्हें दो माह तक नेशनल स्टेडियम के रास्ट्रो टर्फ पर भूतपूर्व ओलम्पिक खिलाड़ी बालकिशन सिंह द्वारा गहन प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया था। इसके अतिरिक्त क्वालालम्पुर (मलेशिया) का गर्म वातावरण भी यूरोपियन देशों की अपेक्षा भारतीय दल के पक्ष में था, फिर भी भारतीय टीम केवल ग्यारहवां (बारह में से) स्थान प्राप्त कर सकी तो उसके पीछे मुख्य कारण उनमें दमखम का अभाव रहा।

लगभग सभी मैचों में भारतीय दल विपक्षी टीम पर तीन-चौथाई समय तक हावी रहा और केवल अन्तिम क्षणों में, जबकि विपक्षी दल अन्तिम-जोर मारने का प्रयास करता था, हमारी लड़कियों की सांसें फूल जाती थी और दनादन एक दो गोल खाकर मैच हारती रहीं।

भारतीय टीम का पहला ही मैच कप-विजेता हालैंड के साथ हुआ! यूरोप की तेजी का जवाब भारतीय लड़कियों ने बेहतर 'स्टिक-वर्क' के साथ दिया और सुधा चौधरी द्वारा पैनल्टी-कार्नर पर अचूक निशाने से किये गये गोल द्वारा बढ़त भी प्राप्त कर ली पर इस बढ़त को बनाये रखने में वह असफल रही और दो गोल खाकर मैच हार गयी।

आस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे मैच में भी मुकाबला कड़ा रहा। पहले हाफ में 2-0 की बढ़त प्राप्त कर लेने के बावजूद भारतीय टीम जब 2-3 से पराजित हुयी तो उसके कई खिलाड़ियों को रोना आ गया। यह विलाप केवल जीता मैच हार जाने पर नहीं था बल्कि मैच के अम्पायर लाउटन द्वारा दो गलत निर्णयों पर था जिनके फलस्वरूप अन्तिम पांच मिनट में भारत पर दो गोल हो गये।

फ्रांस के इस अम्पायर के निर्णयों को लेकर कई-बार वाद-विवाद उठा। स्काटलैंड के विरुद्ध मैच में उसके गलत निर्णयों (जिसमें भारत के विरुद्ध एक पैनल्टी-स्ट्रोक प्रदान करना शामिल है) को लेकर दर्शक इतने उत्तेजित थे कि मैच की समाप्ति पर अम्पायर को पीटने पर आमादा थे। वह तो पुलिस ने बीच-बचाव कर दिया वरना—

पूरी प्रतियोगिता में अम्पारिंग का स्तर विवादास्पद रहा। समान प्रकृति की गलती पर एक अम्पायर 'पैनल्टी-स्ट्रोक' देता था तो दूसरा 'पैनल्टी-कारनर'! ज्ञातव्य है कि 'पैनल्टी-कारनर' की अपेक्षा पैनल्टी-स्ट्रोक पर गोल दागने के चांस अधिक होते हैं।

भारत के तीसरे मैच में वेल्स के विरुद्ध भी सुधा चौधरी ने पैनल्टी कारनर पर तगड़ी हिट लगाकर गोल किया पर वेल्स की शिरले मारगन ने फील्ड गोल करके भारत को एक-एक अंक बांटने पर मजबूर कर दिया। इस मैच में और इसके बाद के मैचों में भारतीय खेल के स्तर को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ कि पहली दो पराज्यों के बाद उनका दिल टूट गया है और उनमें पहली सी इच्छा नहीं रही।

अन्तिमम लीग मैच में स्काटलैंड की कमजोर सी टीम भी भारत को 2-0 से पराजित कर गयी। अन्य मैचों की भांति भारत पूर्वार्द्ध में छाया रहा और बार-बार विपक्षी गोल मुहाने पर पहुंच कर केवल गोली को भेदने में असफल रहा। नौ पैनल्टी कारनर भी मिले पर सब बेकार। दूसरी तरफ अन्तिम 15 मिनट में दो गोल दागकर (प्रथम गोल विवादस्पद) स्काटलैंड बाजी मार गया।

अन्तिम चार स्थानों के वर्गीकरण मैच में भारत अर्जेंटीना से भी 0-1 से पराजित हो गया तथा केवल अन्तिम दो स्थानों के मैच में वेल्स को 2-0 से पराजित कर प्रथम विजय प्राप्त कर सका। भारत की तरफ से लैफ्ट आउट नाजलीन मद्रास वाला तथा सुधा चौधरी ने प्रथमार्ध में गोल किए।

प्रतियोगिता के फाइनल मैच में हालैंड ने कनाड़ा के 4-2 से पराजित कर कप जीत लिया यद्यपि पहला गोल कनाडा ने ही किया और मध्यावकाश तक दोनों टीमें 1-1 से बराबर थी, फिर भी हालैंड की मारजोलीन ईस्वोजेल के खेल की दाद देनी होगी जिसने केवल 20 मिनट की अवधि में शानदार तिकड़ी जमाकर अपनी टीम को विजयश्री दिलाने में मुख्य भूमिका निभायी।

इस प्रतियोगिता में भारत एशिया की एकमात्र टीम थी और उसे लगभग अन्तिम स्थान मिलना तथा प्रथम चार स्थान (तालिका देखें) यूरोप की टीमों को जाना इस तथ्य की तरफ इंगित करता है कि महिला-हाकी में यूरोप की शैली विश्व में सर्वश्रेष्ठ हैं तथा भारत को अपनी (पुरुषों की) परम्परागत शैली को बदलने पर पुनःविचार करने की आवश्यकता है।

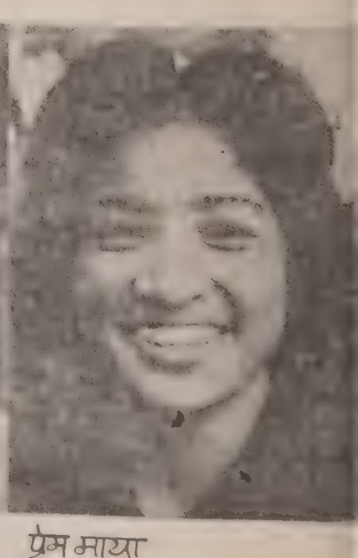
1. हालैंड	2. कनाडा
3. आस्ट्रेलिया	4. प० जर्मनी
5. इंगलैंड	6. अमेरिका
7. स्काटलैंड	8. न्यूजीलैंड
9. अर्जेंटीना	10- सोवियत संघ
11. भारत	12. वेल्स



सेलमा डी सिलवा



फियोना



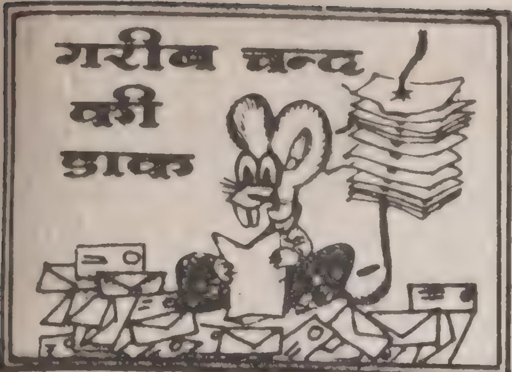
प्रेम माया

फैण्टम-जंगल शहर



तुम हमें चकमा दे रहे हो, मि० बौंग, फैन्टम क्या है ?
मेरी मानो ।
गुरु को मेरी सलाह दो, जल्दी शहर से भाग जाएं ।
इससे कोई फायदा नहीं—गुरु ने ललोनी से पूछने को कहा था ।
वह तो सपनों के घर में है, उससे भी खास मदद नहीं मिलेगी
FALK & BARRY 2/20
हम उसे जगा लेंगे—हे । यह तो बन्द है ।
देखो वही चिन्ह है ।
अच्छा, मिला वो तुम्हें ?
नहीं गुरु, बौंग तो किसी भूत की बकवास कर रहा था, उसने खोपड़ी का चिन्ह दिखाया था ।
फिर हम सपनों के घर गए ।
ललोनी के पास, पर वह बन्द था, ताला लगा था वही खोपड़ी का निशान था दरवाजे पर—इसका क्या मतलब है ?
खोपड़ी का चिन्ह ?
© 1981 King Features Syndicate Inc World rights reserved
FALK & BARRY 2/21
शायद मैं समझ सकूं ?
!!
!!
!
गुरु तुम मुझे ढूंढ़ रहे हो । ठीक ! मैं तुम्हें ढूंढ़ रहा हूं, हमने एक-दूसरे को ढूंढ़ लिया ।
!???!
FALK & BARRY 2/23
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World
यह वही है । मार दो ।
बन्दूकों के लिए हड़बड़ी ।
!!!!
FALK & BARRY 2/24
!!
!
!
!
गुरू के आदमी बन्दूक निकालते हैं. फैन्टम उनसे भी तेज चलता है ।
फैन्टम का घातक गोली बरसाना···जैसे दो मशीनगन··· उनके हथियार उड़ा देता है ।


बन्दूकों का इन्तजाम तो हो गया. अब हम बातचीत कर सकते हैं गुरु ।
जाओ, उसे पकड़ लो।
मारो, पीटो खत्म कर दो ।
खत्म कर दो.
मार दो···
!
FALK & BARRY 2/26
वह—वह आदमी नहीं है—वह कोई राक्षस है—चलता-फिरता भूत ।
उसने···उसने उन सबको मार गिराया—वह मानव नहीं है ।
गुरु ! रुक जाओ ।
!
ठांय···ठांय···
ठांय···ठांय ।
FALK & BARRY 2/27
जैसे गुरू भाग निकलने की कोशिश करता है ।
BAM BAM BAM
© 1981 King Features Syndicate Inc. World rights reserved
मैं बच निकलूंगा—हा—हा वह मुझे कभी नहीं पकड़ पायेगा ।
गुरु और न भागो ।
!
क्रमश



गुरमीतसिंह मीता, नई दिल्ली : प्यार की गाड़ी किस स्टेशन पर रुकती है ?

उ० : अपने खुद ही सवाल का जवाब दे दिया 'Kiss' स्टेशन पर रुकती है और वहां से कोयला पानी लेकर शादीपुर डिपो की ओर चल पड़ती है ।

केवल प्रकाश दुआ, काशीपुर : जब खाली सोचने से कुछ नहीं बनता तब मनुष्य चिन्ता क्यों करता है ?

उ० : चिन्ता इसलिए करता है कि उसे कुछ न कुछ तो करना है ही । खाली सोचना आदमी छोड़ दे तो दुनिया में कुछ नहीं रह जाता । हमारे देश में 99 प्रतिशत जनता खाली सोचकर यानि ख्याली पुलाव पका कर जिन्दा है ।

कमलेश राजपूत, जबलपुर : मां-बाप साक्षात् ईश्वर का रूप हैं अगर ये रूठ जायें तो इन्हें कैसे मनायें ?

उ० : साक्षात् ईश्वर का रूप तो कोई नहीं हो सकता । हमारे देश में 25-30 वर्ष से ऊपर की आयु वाले सभी या बाप हैं या मां हैं इसका अर्थ हुआ कि हमारे देश में जो कुछ हो रहा है वह ईश्वर कर रहे हैं यानि भ्रष्टाचार, बेईमानी, चोर बाजारी, लूटमार, हिंसा, जातिवाद, प्रांतीयवाद, साम्प्रदायिकता, भाई-भतीजावाद आदि-आदि ।

पंकज वार्ष्णेय, अलीगढ़ : गरीबचंद जी, अंकल क्या ईमानदार लोग इस दुनिया में जी सकते हैं

उ० : हां, यदि उनमें नल के पानी और हवा खाकर जिन्दा रहने की शक्ति आ जाये ।

श्याम गगनानी, मूर्तिजापुर : गरीबचंद जी, सरकार कहती है 'गरीबी हटाओ' आप क्या कहते हैं ?

उ० : हम कहते हैं भाई 'अमीरी (आई) तब गरीबी जाई ।'

प्र० : दिल का चिराग रोशन करने के लिये घासलेट कहां मिलता है ?

उ० : कोई हसीना घास डाले तो उस पर जाकर लेट जाओ यही घासलेट बना बनाया मिल जाएगा ।

अशोक जौहर 'भगत', देहरादून : क्या सचमुच मेरे सितारे गर्दिश में हैं । कई लाटरी के टिकट खरीदे एक इनाम भी नहीं पाया, बताइये क्या करूं ?

उ० : लाटरी टिकट खरीदने की बजाय लाटरी टिकट बेचना शुरू कर दें ।

मधुकर निलकंठ राव चुटे, धुलिया : गरीबचंद जी, महाराष्ट्र राज्य में मुख्यमंत्री कैसा होना चाहिए ?

उ० : महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री किसी लावणी डांसर को होना चाहिए ताकि और कुछ न हो तो जनता का मनोरंजन ही हो ।

दिनेश प्रहलाद जावरे, वर्धा : संतरी और मंत्री में क्या फर्क है गरीबचंद जी ?

उ० : संतरी पहरा चोखा देता है मंत्री गहरा धोखा देता है ।



नवनीत तलवार, जयपुर : गरीब चंद, सुन्दर वस्तु कब डरावनी लगती है ?

उ० : जब वह सुन्दर वस्तु जान जोखिम में डालने का कारण बनती है । आपने कोहेनूर हीरे का किस्सा सुना ही होगा । उसके पीछे कितनी जानें गयीं । हैलन आफ ट्राय और क्लीयोपेट्रा की कहानी भी पढ़ी होगी ।

प्रेम बाबू शर्मा—बगीची पोरजी : आज का समाज किसी तरक्की करते व्यक्ति से क्यों जलता है ?

उ० : पुराना समाज तो आज के समाज से भी ज्यादा जलता था । आज तो कम से कम मनुष्य का सोचने का दायरा पहले से काफी ज्यादा विस्तृत हो गया है । पुराने जमाने में कलाकार कोई अति सुन्दर रचना करे तो उसका अंगूठा काट दिया जाता था ताकि वैसी सुन्दर वस्तु किसी और के लिए न बना सके ।

के. पी. अरोड़ा, काशीपुर : अपनी बेबसी पर रोने के अलावा और क्या कुछ कर सकते हैं ?

उ० : बहुत कुछ किया जा सकता है । विविध भारती को गम के गानों की फरमाईश भेजी जा सकती है । बेबस क्लब बनाया जा सकता है । बेबसों की यूनियन बनाई जा सकती है ।

अशोक कुमार राना 'राजू', कलानौर : गरीब चन्द जी, आपकी तनख्वाह कितनी है, कुछ रिश्वत भी लेते हो या…?

उ० : जितने पोस्ट कार्ड मुझे मिलते हैं डाक व तार विभाग उन पर मुझे कमीशन देता है वही मेरी तनख्वाह है । और बोनस के रूप में आप पत्र लिखने वालों का प्यार मिलता है । रिश्वत के रूप में कभी-कभी पुरुष पाठक अपना नाम महिला रूप में लिख भेजते हैं ।

राहुल गोदिका, जयपुर : गरीब चन्दजी, आज के युग में बुराई पर चलने वाले की ही जीत क्यों होती है ?

उ० : भाई, बुराई में राई है । राई का पहाड़ बनाया जा सकता है । अच्छाई में बस छाई है । छाई का क्या बनाओगे ? दाग-धब्बे ?

गुमानसिंह राजपूत, फिरोजपुर कैंट : डियर अंकल जी, कहा जाता है कि लालरंग खतरे का निशान है, शादी शुदा औरतें लाल लिपस्टिक, बिन्दी और संदूर लगाती है । वह इतनी खतरनाक नहीं होतीं जितनी कि कुआंरी लड़कियां खतरनाक होती हैं पर उनके कोई खतरे का निशान नहीं होता, क्यों ?

उ० : लगता है आपकी अभी शादी नहीं हुयी इसीलिये यह प्रश्न पूछा । भैया, कुआंरी लड़की तो पटाखा है । हाथ जल जायेंगे या ज्यादा से ज्यादा कान के पर्दे फट जायेंगे । शादीशुदा औरत तो एटमबम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रोजन बम और कोबाल्ट बम है । आपकी धज्जियां उड़ जायेंगी । आप कुआंरी लड़की रूपी रस्सी को सांप समझ रहे हैं । छाछ को फूंक-फूंक कर प्रश्न पूछ रहे हैं ।

रजनीश जैन, टोहाना : अगर कोई मनुष्य चाह कर सच न बोल सके तो ?

उ० : तो समझना चाहिये वह आदमी नहीं टिशू पेपर का लिफाफा है ।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया, मंडला : गरीब चंद जी बेवफाई कब अच्छी लगती है ?

उ० : जब बेवफाई आपकी प्रेमिका अपने पति से कर रही हो ।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना पाक्षिक
८ बी, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

दीवाना यात्रा गाइड

यात्रा कैसे करें ? टूरिस्ट का काम यात्रा करना ही है। यात्रा के दौरान कुछ ध्यान रखने योग्य दीवाने टोटके आपकी आजमाइश के लिए बेकरार हैं।



यात्रा में डाक्टरों के सलाह को गोली मारियें। खूब तली हुई चीजें, पूरी, कचौरी खाइए। कब्जी हो जायेगी और बाथ-रूम जाने की हाजत नहीं होगी, सफर आराम से कटेगा। न सीट से हाथ धोना पड़ेगा न सामान गायब होगा।



सफर में हमेशा गहरे के रंग चश्मे पहने रहिए। लोगों को यह पता नहीं लगेगा आप किसे घूर रहे हैं। और किस हसीना मुसाफिरना से आंख मटक्का कर रहे हैं। जूते पड़ने का डर नहीं रहेगा।



हल्का सफर करें यानि माल असबाब कम रखें। यहां तक कि टिकट को भी बोझ समान समझें।



सफर में जिस यात्रा के पास टिफिन कैरियर नजर आये उससे मित्रता करें। कुछ चुटकुले याद करके रखें। सफर में आपको लोकप्रिय बनाने में काम आते हैं। सिगरेट पेश करें— जब वह खाना खाने लगेगा तो आपको भी पूछेगा। बस मुफ्त में खाना मिल गया न।



गर्मियों में रबड़ के जूते पहनें और अपनी जुराबें कभी साफ न करें। गंदी बदबुदार जुराबें अपने सूटकेस में डालते जायें। कस्टम वाले आपके सूटकेस की तलाशी लेने को हिम्मत नहीं जुटा पायेंगे।



जुराबें गंदी रखने का एक और लाभ है। जहां आप बैठें आपके निकट आकर कोई और बैठने की जुर्रत नहीं करेगा। सारी सीट पर आपका एक-छत्र राज होगा।



सफर में आपके साथ आपकी गर्ल फ्रेंड है तो बस या ट्रेन से सफर न करें। मुफ्त में लिफ्ट मिल जायेगी। गर्ल फ्रेंड को लिफ्ट मांगने के लिए आगे करें और, खुद सामान के पीछे छिप जायें। कार वाला उसे अकेली समझ फौरन कार रोक कर दरवाजा खोल लेगा। तब आप उठियें और चट से सामान अन्दर रखना शुरू करें। जब तक कार वाले को माजरा समझ आयेगा तब तक उसके लिए देर हो चुकी होगी।



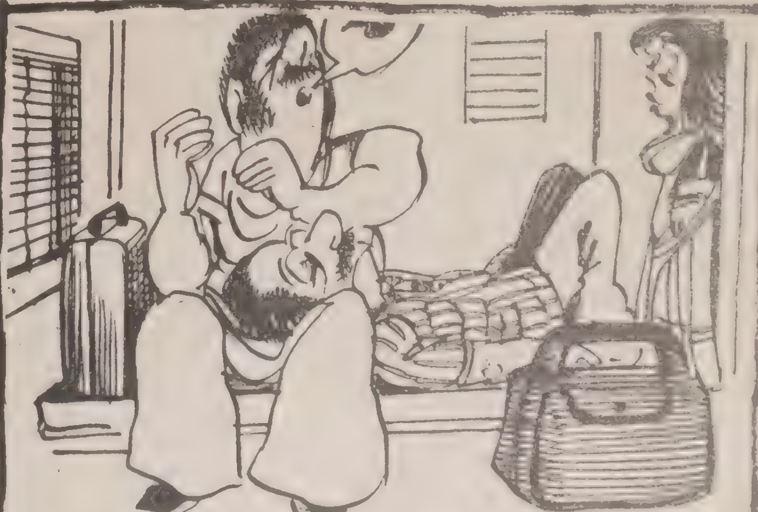
रेस्तरां में वेटर को टिप मत छोड़िए, अगली बार आप जायेंगे तो वह आपकी टेबल की तरफ ध्यान नहीं देगा। मजे से बैठे सिगरेट फूंकते रहिये और गाने गाइये। टाइम कट जाएगा और बिल भी नहीं देना पड़ेगा।



सफर में एडवांस बुकिंग न करायें तो बड़े मनोरंजक हादसे होंगे। जैसे आप रेलवे स्टेशन गये, सीट नहीं मिली और आपको लौट कर घर आना पड़ा और—और हो सकता है आप अपनी पत्नी को अपने प्रेमी के साथ पकड़ लें।



ए. सी. या डीलक्स बसों में यात्रा न करें, उनमें सीटें अलग-अलग होती हैं। साधारण बसों में सफर करें। साथ में बैठी हसीना के साथ धक्कम-धक्का करने का सुअवसर मिलेगा।



अपने साथ वाले यात्री की सुविधा का पूरा ख्याल रखें। गोदी में सिर रख सोने दें, खुली जगह दें। वह आराम से बैठेगा, टेढ़ा होगा लेट जायेगा। जब वह जागेगा तो आप पाओगे उसकी जेब से सिक्के गिरकर सीट पर पड़े हैं। आपके चाय पानी का खर्चा निकल आया।

'मेरे ख्याल से नहीं।'

'फिर हम क्या करें ?'

'कुछ नहीं, बस यहां प्रतीक्षा करते हैं, कोई न कोई कार तो अवश्य इस ओर से आयेगी।'

'फिर हम वापिस शहर चले जायेंगे, ठीक ?' लड़का निर्णय के लिये पूरी तौर से लड़की पर निर्भर प्रतीत होता था।

'बेशक हम डाक्टर या किसी और को वापस यहां भेज देंगे। पर यह व्यक्ति तो शायद तब तक मर चुका होगा और हमें पुलिस में भी रिपोर्ट करनी होगी।'

'पुलिस ?'

'हमें करनी ही होगी, तुमने एक आदमी की हत्या की है।' फिर वे चुप हो गए। पाल उनके कदमों के करीब पड़ा इन दो आकृतियों को देख रहा था। वे उसके विषय में ऐसे बात कर रहे थे मानों वह मुर्दा ही हो। पर पता नहीं क्यों उसे इससे गुस्सा नहीं आया, शायद इसलिए कि वह भी स्वयं को मृत ही समझ रहा था।

'आशा···वह मुझे क्या करेंगे ?'

'कौन, पुलिस ?

'हां···तुमने कहा न, मैंने एक आदमी की हत्या की है।'

'अच्छा तुमने मारा है कि नहीं ?

लड़का कुछ रुका,'पर वह तो दुर्घटना थी' वह अन्त में बोला, 'तुम तो जानती हो न, आशा, वह दुर्घटना थी ?' मेरा मतलब वह बस हो गई।'

'बेशक।'

वे दोनों बहुत धीरे-धीरे बोल रहे थे परन्तु पाल को उनकी बातों का एक-एक शब्द साफ सुनाई दे रहा था और उससे बोले बिना नहीं रहा गया 'हर दुर्घटना किसी न किसी की भूल होती है' उसने उन्हें बताया।

वह घबरा गए। उसने उन दोनों को एक दूसरे की तरफ देखते हुए देखा फिर अपनी ओर देखते हुए पाया।' इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है मिस्टर ?' लड़के ने एक क्षण बाद पूछा।

दुर्घटना तुम्हारी गलती से हुई, मेरा यह मतलब था।' वह अब बिलकुल नाराज नहीं था। उसके बहस करने का यह कारण नहीं था पर उसके ख्याल से आरोप लगा दिया जाना चाहिए।

'मेरी गलती कैसे थी ?'

'सबसे पहले, तुमने लाईट डिम नहीं की थी···।'

'अच्छा, तुमने भी नहीं की थी।'

'पहले मैंने डिम की थी।'

'परन्तु तुमने फिर से पूरी तेज कर दी थी।'

'तुम्हारे डिम न करने के बाद ही।'

लड़का फिर से एक क्षण के लिए चुप हो गया फिर वह बोला 'परन्तु जब टक्कर हुई तुम्हारी लाईट पूरी तेज जल रही थी।'

पाल को सहमत होना पड़ा, मुझे गुस्सा आ गया था 'वह बोला, पर यह सबसे महत्व की बात नहीं है, तुम सड़क की मेरी दिशा में कार चला रहे थे।'

लड़के ने अपना चेहरा लड़की की ओर घुमाया 'आशा क्या मैं सड़क के दूसरी ओर था ?'

ऐसा लगा वह हंसी। मुझे क्या मालूम ? हम तो······।' उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया पर पाल ने अनुमान लगा लिया, वे प्यार कर रहे थे या एक दूसरे के बहुत करीब हो थपथपा रहे थे जो भी कुछ आजकल के नौजवान इसे कहते हों, इसी कारण लड़के ने लाईट डिम नहीं की थी और इसी वजह से उसकी कार उसके नियन्त्रण में नहीं थी और अब उसे(पाल को) उनकी मौज की कीमत चुकानी पड़ रही थी।

अब आखिर उसे गुस्सा आ ही गया। एक अजीब सी नाराजगी थी उससे अलग, दूर सी। क्योंकि अब उसे इससे कुछ खास फर्क पड़ने वाला नहीं था क्योंकि वह तो मरने ही वाला था।

पर साथ ही पाल को कुछ संतोष भी महसूस हुआ। वह पूरे विश्वास से दृढ़ता पूर्वक बोल सकता था, 'हां देखो तुम सड़क की गलत साईड पर थे इसलिए गलती तुम्हारी थी।'

लड़के ने उसकी बात सुन तो ली पर वह लड़की की ओर ही देखता रहा। 'वे मेरा क्या करेंगे ?' उसने लड़की से पूछा। 'मेरा मतलब पुलिस, वह मुझे क्या सजा देंगे ?'

'मुझे क्या पता ?' वह गुस्से से बोली; वह इतनी शान्त थी,अब लगता था आरम्भिक धक्के का प्रभाव हट रहा था, अब लगता था वह घबरा और डर रही थी। 'चाहे मैं सड़क की गलत साईड पर भी था,' परन्तु तो भी यह था तो ऐक्सीडेन्ट ही, मैंने जानबूझ कर इस आदमी की कार में टक्कर नहीं मारी, न न ही मैंने इसकी हत्या की है।' लड़का बोला।

'यह ठीक है······।'

'तुम ऐसी दुर्घटनाओं के विषय में समाचार पत्रों में पढ़ते तो हो, चालक को कुछ अधिक सजा नहीं होती। हो सकता है उसे जुर्माना हो जाये। मेरे पिता जुर्माना भर सकते हैं अगर मुझे जेल भी जाना पड़ा तो ज्यादा दिन के लिए तो नहीं होगा न, आशा···?' तीस दिन ?'

'या शायद साठ, पर वह इतना बुरा नहीं होगा।'

पाल उनका वार्तालाप सुनता रहा और अचानक उसके भीतर गुस्से का गुब्बार उठने लगा। या शायद नब्बे दिन, वह उनसे कहना चाहता था। किसी कम्पनी को हरजाना भरना पड़ेगा, परन्तु हत्यारे को कुछ अधिक नहीं भरना पड़ेगा। हत्यारे के लिए नब्बे दिन।

'सिर्फ एक बात है' लड़का अचानक बोला।

'क्या ?'

'इसे दुर्घटना समझा जायेगा।' या शायद इसे मेरी गलती कहा जाये, थोड़ी-थोड़ी दोनों ही, पर यदि आदमी स्वयं किसी से कुछ न बके।'

'किस विषय में ?'

'बत्तियों के विषय में, किसने डिम की किसने नहीं की और कौन सड़क की किस तरफ था। परन्तु बेशक यदि यह मर गया होगा तो कुछ नहीं कह सकेगा।'

'यह तो ठीक है' अचानक लड़की के स्वर में कुछ जाग गया था।

'इसलिये इसे मारना ही होगा। तुम समझी, आशा मैं क्या कह रहा हूं ?'

'वह कह रहा था वह मरने वाला है।'

'हां, पर उसे क्या पता, न ही हमें मालूम है। पर उसे मारना ही होगा। हमें उसका मरना निश्चित करना होगा' 'अचानक लड़के के स्वर में एक फितूर भरी तेजी आ गई थी पाल ने लड़की को लड़के की बांह थाम उसके चेहरे की ओर देखते देखा। उसके शरीर की पूरी मुद्रा से डर झलक रहा था।

'एक बात और भी है।' लड़का जल्दी से लगभग हकलाते हुए बोला, मेरे पिता ने मुझे बीमे के विषय में बताया था। अपंग व्यक्ति को अधिक धनराशि देनी पड़ती है बनिस्बत मृत के। अपंगों को वे बहुत धन दिलवाते हैं। मुझे नहीं मालूम हमारा बीमा इतना बड़ा है या नहीं। यदि वह व्यक्ति मरता नहीं परन्तु

बुरी तरह अपंग हो जाता है, तो फिर हमें इसे अपने बीमे से बहुत अधिक धन देना पड़ेगा। और तब मेरे पिता मेरा क्या हाल बनायेंगे।'

अब लड़की भयभीत हो गई थी 'परन्तु वह तो मरने ही वाला है, उसने बैठे स्वर में फुसफुसाया।'

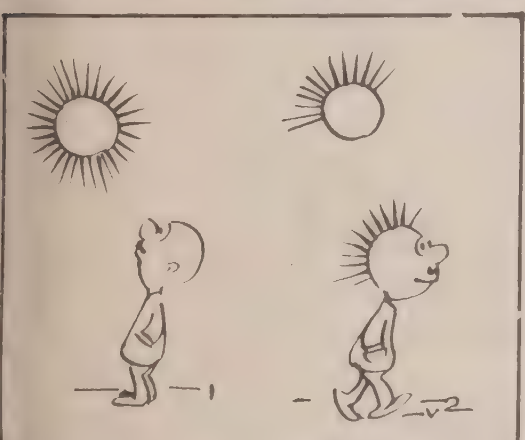
'हमें क्या पता, आशा, हमें क्या पता ?'

पाल को अब किसी दर्द का अहसास नहीं हो रहा था केवल गुस्सा आ रहा। उन्होंने उसे सहायता नहीं दी। वे उसे मृत चाहते है। वे स्वार्थी हैं, विश्वास न करने योग्य स्वार्थी। वे यह सब बहस कितनी क्रूरता से कर रहे हैं।' ठीक उसके ही सामने।

अचानक लड़का झुक कर लाईट की सहायता से पाल के चेहरे को देख रहा था। पाल प्रकाश के कारण देख नहीं पा रहा था। फिर भी लड़के के चेहरे की एक झलक उसे मिल ही गई। जवान, जवान लड़की के समान ही। भय उसकी आंखों में झलक रहा था, और उसके भी चोट लगी हुई थी। खोपड़ी की बाईं ओर एक बुरा सा घाव था जिससे निकले खून से उसके बाल जम गए थे।

'तुम्हारा क्या हाल है, मिस्टर ?' लड़के ने पूछा।

पाल ने सवाल को अनसुना कर दिया। दोबारा वह उन्हें संतोष नहीं देगा। अब वह उन्हें नहीं बताएगा कि वह कैसे तेज दर्द



का अनुभव कर रहा है। वह उन्हें नहीं बताएगा कि मौत उसके कानों में जीवन छोड़ देने के लिए पहले ही फुसफुना रही है।

परन्तु उसने लड़के के चेहरे पर नैराश्य झलकता देखा। लड़के ने फ्लैशलाईट से पाल के शरीर का ऊपर से नीचे तक निरीक्षण किया। फिर वह खड़ा हो गया।

फिर वह लड़की से बोला।

'मरने लायक काफी चोट नहीं लगी है इसे।'

नहीं, देखने में चोटें इतनी गहरी दिखाई नहीं दे रहीं, पाल ने सोचा, हानि अधिक अन्दरूनी है परन्तु है उतनी ही घातक फिर भी उन्हें मैं नहीं बताऊंगा। होने दो परेशान और हो सकता है किसी दूसरे व्यक्ति के पहुंचने तक जिन्दा ही रह जाऊं।

अचानक दर्द की एक लहर ने उसे बेहोश सा कर उसकी सोचने की शक्ति समाप्त कर दी।

लड़की चिल्लाई और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह उसके लिए ही चिल्लाई थी। लगता था लड़के ने किसी प्रकार उस पर प्रहार किया था। तुम क्या कर रहे हो ?' उसने पूछा।

लड़के का उत्तर भी चिल्लाहट के जैसा ही था। 'इसे मरना ही होगा, मुझे इसे मारना ही होगा।'

लड़की के हृदय में कुछ भलमनसाहत बची हुई थी या नारी सुलभ हृदय ही समझो, 'तुम उसकी हत्या नहीं कर सकते, उसने जोर से कहा।

'क्या फर्क पड़ता है' उसने दोबारा बहस करते हुए उत्तर दिया, उसका स्वर हताशा सा था, 'मैंने उसकी हत्या तो कर ही दी है न ? सिर्फ उसे जल्दी से मर जाना होगा। क्या तुम नहीं समझती, आशा ?'

जाहिर है वह नहीं समझ रही थी, उसने लड़के से लिपट कर उसे रोक लिया।

'कभी किसी को इसका फर्क पता नहीं चलेगा' लड़के ने उसे बताया, उसकी बात में तर्क था। 'पहले ही दुर्घटना से उसके शरीर पर चोटें लगी हुई हैं, वे इसे भी ऐक्सीडेन्ट का ही परिणाम समझेंगे।'

कुछ देर वे दोनों मौन रहे। पाल अपनी गर्दन को जहां तक घुमा सकता था घुमा कर उसने देखा वे दोनों आकाश की पृष्ठभूमि के सामने दो काली छायायें थीं जो एक दूसरे के करीब थीं कि एक दूसरे में लुप्त हुई प्रतीत होती थीं, पाल को उनके आलिंगन में नैराश्य की झलक महसूस हो रही थी। लड़की के भीतर नारी हृदय की दया भावना, लड़का एक वहशी से कम कुछ भी नहीं जो अपने को बचाने के ख्याल में पागल था। फिर भी किसी प्रकार लड़की उसे प्यार कर रही थी और क्योंकि वह उससे प्रेम करती थी वह उसका इसमें भी साथ दे रही थी।

'ठीक है रोहन।' आखिर में उसने उसे कहते सुना।

और फिर भी पाल केवल वहां पड़ा ही रह सकता था। शायद ये ठोकर मार-मार कर उसकी जान ले लेंगे। जानबूझकर हत्या की जाएगी बड़े ही क्रूर और नपे-तुले तरीके से। एक जालिम, कमजोर लड़के की रक्षा के लिए पता नहीं क्यों उसे पहली मृत्यु का डर नहीं था परन्तु इसने उसे भयभीत कर दिया था, इस मृत्यु में एक प्रकार की वीभत्सता थी।

'नहीं !' वह अपनी पूरी शक्ति से उन पर चीखा।

'नहीं।'

उसकी चीख ने उनका आलिंगन तोड़ दिया लड़के के हाथ की फ्लैशलाईट ने एक बार फिर उसके चेहरे की खोज की। पहले पाल में गर्व था पर अब कुछ नहीं था, उसने प्रकाश से मुंह नहीं फेरा, उसने उन्हें अपने चेहरे की घृणा देखने दी।

'क्या तुम्हारा ख्याल है तुम कर पाओगे, रोहन ?' लड़की ने पूछा। अब क्योंकि उसे विश्वास दिला दिया जा चुका था, वह उन दोनों में से अधिक हिम्मत रखेगी।'

'मुझे नहीं मालूम, पर मुझे करना ही पड़ेगा।' वह बोला पाल ने लड़के को आते देखा तो आंखें बंद करलीं।

'एक क्षण रुको' उसे लड़की का स्वर जैसे किसी सुरंग से आता सुनाई दिया, इस समय वह दुःख की चरम सीमा पर था और लड़की की आवाज दूर से आती प्रतीत हो रही थी ?'

'क्या बात है ?'

'तुम्हारे ऊपर खून के छींटे पड़ रहे हैं न ? मुझे नहीं मालूम।'

'देखो तो सही।'

'हां, पड़ तो रहे हैं, पर इससे क्या फर्क पड़ता है।'

'रोहन, रोहन, क्या तुम पागल हो गए हो ? वे लोग खून देखेंगे, और हो सकता है किसी को शक हो जाये, आज कल खून की जांच हो सकती है, जिससे मालूम हो जाता है किसका खून है।'

आशा की एक छोटी सी किरण, और पाल ने फिर से आंखें खोलने का साहस किया।

लड़का उस पर दूसरा प्रहार करने को तैयार था पर अब वह कुछ झिझका।

'मुझे पता चल गया, क्या करना चाहिए' अन्त में वह बोला।

अचानक उत्सुक सा वह पाल की नजरों से दूर चला गया. परन्तु पाल को उसके घास तोड़ने इत्यादि की आवाज सुनाई दे रही थी।

फिर वह चिल्लाया।

'आशा, इधर आकर इसे उठाने में मेरी मदद करो।'

घास को कुछ और खींचा तोड़ा गया फिर लड़की लड़के के पास पहुंच गई।

तब लडके का उत्सुक स्वर सुनाई दिया 'यह व्यक्ति कार में से बाहर फेंका गया था न। ठीक है, तो फिर बस उसका सिर इससे टकरा गया था। हम उसके शरीर को जरा ठीक जगह पर कर देते हैं। आओ दोनों मिल कर इसे उठाते हैं।

धीरे-धीरे उनके कदम करीब आये, पाल ने उन्हें खोजने का प्रयास किया, वह उसे दिख गए, दोनों साथ उसकी ओर बढ़ रहे थे। दोनों की कमर बोझ से झुकी हुई सी थी। दोनों कुछ भारी सी सपाट चीज उठा कर ला रहे थे, चीज बहुत भारी प्रतीत होती थी।

इस बार वह चिल्लाया नहीं, क्योंकि उसमें शक्ति ही न थी। उसकी आवाज भी डर के कारण उसका साथ छोड़ रही थी, पर वह उन्हें देखने का साहस नहीं कर सका। दोनों बड़ी मुश्किल से चल रहे थे दोनों उसके अगल बगल खड़े हो गए। और उसे बड़ी भारी सपाट चीज ने उसके सामने से आकाश को लुप्त कर दिया।

तब अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में उसकी चेतना जाग्रत हो उठी, एक आरामदेह शान्ति उस पर फैल गई। मैं तो हर हालत में मरने ही वाला था। यह जल्दी हो गया, शायद इसे एक प्रकार की दया भी कहा जा सकता है, परन्तु यह एक हत्या भी है।



उसने प्रार्थना की, एक अद्भुत प्रार्थना, चतुर पुलिस अफसर के लिए।

सार्जेंट वरुण इस क्षेत्र का एक बहुत ही चतुर अफसर है।सुबह के धुंधलके में उसने सड़क पर टायरों के चिन्हों का निरीक्षण किया। पक्की काली पर उन्हें देख पाना कठिन था इसी कारण वह फैसला नहीं कर पाया।

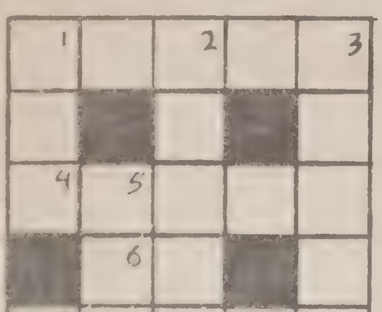
वह उन लोगों के विषय में, उन दोनों के जो उसकी कार के करीब खड़े दूर से उसे काम करते देख रहे थे अधिक पक्की तरह महसूस कर पा रहा था। लड़का रोहन और लड़की आशा कितने और इस प्रकार के ऐक्सीडेन्टों में फंसे नौजवानों के समान थे परन्तु फिर भी उनमें कुछ फर्क था। इसलिए दिन निकलने के साथ-साथ उसने अपनी खोज जारी रखी।

उसे अपनी आशा से कुछ अधिक ही मिला। मृत के शरीर को उसके स्थान से हटाया गया था और वह स्थान काफी रौंदा हुआ था, फिर भी उसे प्रमाण मिल ही गया, जो बिलकुल साफ और अशंकनीय था। वह खड्ड से बाहर निकल लडके और लड़की के पास आया उसके चेहरे पर अवश्य ही कोई भयानक भाव रहा होगा क्योंकि लडके ने घबरा कर पूछा, 'सार्जेंट क्या बात है?'

'पत्थर की दो सतह होती हैं' सार्जेंट वरुण बोला, 'ऊपर की सतह वर्षा से धुलने के कारण साफ रहती है, नीचे की सतह धरती पर होने की वजह से मैली होती है। अब तुम मुझे बताओ, बेटे, मि. पाल अपनी कार से ऐसे कैसे गिरे कि उनका सिर पत्थर की निचली सतह से टकराया?'

★★

दीवाना
वर्ग पहेली
.20 रु. इनाम जीतिये



अन्तिम तिथि ४ जून ८३

नाम ____________________

पता ____________________

संकेत

बायें से दायें

१. एक देश जिसमें पहले डेडी हैं फिर एक क्रिया जिस पर देश में बैन लगाने की मांग रही है और बाद में सुर (५)

४. आँखों में आंसू नहीं हैं लेकिन बीच में शुरू का पर्वतारोही तो है (२-३)

६. एक उल्टा एक चौथा (२)

७ दुश्मन शराब कविता भाषा में (३-२)

ऊपर से नीचे

१. धर्म गुरु जिसके पास बिछाने की चीज है (३)

२. दूध पीने का मौलिक तरीका! (५)

३. कौन सी सहगल लेखिका है? (५)

५. दूल्हे का भाव जिसके चढ़ने पर गुस्सा आ सकता है? (३)

चनाकुरमुरा

कलाकार—मैं अपनी एक कलाकृति दान के लिये देना चाहता हूं।'.

आलोचक—'किसी अंधों की संस्था को क्यूं न दे दो।'

●

गुस्से से भरी एक बूढ़ी स्त्री ने एक छोटे लड़के को सिगरेट पीते पकड़ लिया।

'क्या तुम्हारी मां को पता है कि तुम सिगरेट पीते हो?' उसने पूछा।

'लेडी, क्या तुम्हारे पति को पता है कि तुम सड़क पर रुक-रुक अजनबी पुरुषों से बात करती हो?'

●

एक मां अपने चार वर्षीय जुड़वां लड़कों को दुकान से कोट दिलवाने आई।

'क्या आपके जुड़वां लड़के कोट पहन कर स्वयं को शीशे में देखना पसन्द नहीं करेंगे?' दूकानदार ने पूछा—

'ओह, उसकी आवश्यकता नहीं है।' स्त्री बोली, 'वे कभी शीशा नहीं देखते केवल एक-दूसरे को देख लेते हैं।'

दीवाना डैटोज प्रतियोगिता नं० १ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—दर्शन नटवर लाला जानी
972, झुमकी नी खड़की, संकरी शेरी, अहमदाबाद-380001

द्वितीय पुरस्कार—प्रमोद कुमार भारद्वाज
डी-55, शास्त्री नगर,
जोधपुर-342003

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं० २८ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—परवेज अहमद—टीटागढ़, 24 परगना।

द्वितीय पुरस्कार—रजत शर्मा—राउर केला, रजित खन्ना—कानपुर, रीतू जैन—कानपुर।

तृतीय पुरस्कार—(10) ज्योत्सना एम. परब—मलाड, बम्बई, संजय सीताराम घनावडे—बंबई, अजय कुमार—काटा बांजी (उड़ीसा), कुमारी संगीता शर्मा—हापुड़, रवीन्द्र कुमार शर्मा—नई दिल्ली, संदीप—मलाड, बम्बई, बीना गांधी—हावड़ा, तजेन्द्र भाटिया—दिल्ली, शानू साह—आगरा, रजनीश कुमार जैन—टोहाना, हिसार।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार (5) कृष्ण गोपाल वर्मा—मूह कैन्ट, दिलीप व्यास—नटहड वाड़ा, जय नारायण—नई दिल्ली, राजेश बनवारी—लश्कर (ग्वालियर), वरून मोहन्द्रा—नई दिल्ली।

सर्टीफिकेट (10) तरनदीप नन्दा—नई दिल्ली मोनिका वधवा—नई दिल्ली, तृपती सुमाशमो पटेल—वडोडरा, प्रमोद कुमार भारद्वाज—जोधपुर, गोविन्द कुमार अग्रवाल—काठमांडू, सुमरिता श्री वास्तवा—लखनऊ, संदीप राजीव भाई पटेल—अहमदाबाद, बिमल शाह—अहमदाबाद, मनोज मडनानी—आगरा, प्रदीप कुमार अमित—टेहरी गढ़वाल।

दीवाना के अंक 7 में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

ला	ज	क	प	ह	रा
मा	ला		रे	ता	
	व	न		ह	द
ति	त	र	बि	त	र
भि	र		ना		बा
र	ण		का	वे	शी

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता—हर्षराज सिंह खींची
175, जगदीश भवन, दादावाड़ी, कोटा (राज)।

लघु विज्ञापन

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
५० रुपये	२६ रुपये	२ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ६० रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क निम्न पते पर शीघ्र भेजिये
सरकुलेशन मैनेजर, दीवाना ८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

- -

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम————————————————

पता————————————————

————————————शहर/जिला————————

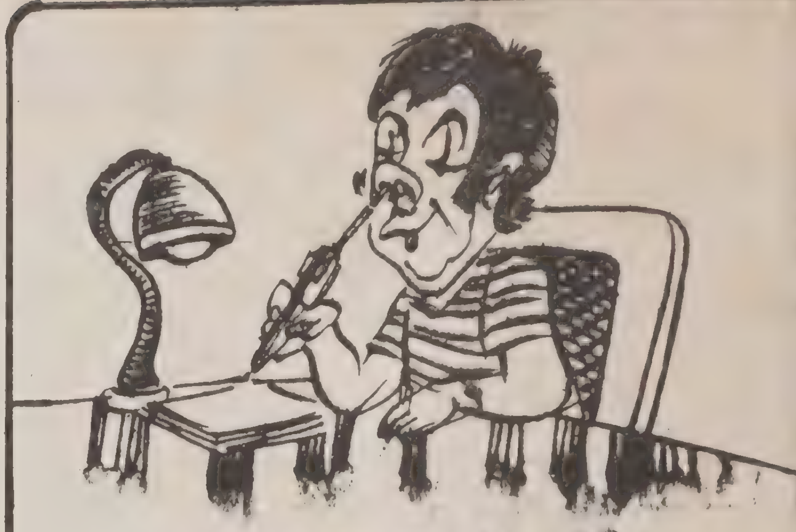
राज्य ——————————पिन कोड ——————————

विशेष उपहार दीवाना के उन पाठकों को जो दीवाना के 6 वार्षिक सदस्य बनाकर हमें भेजेंगे एक दीवाना टी शर्ट या छः माह के लिए दीवाना मुफ्त दी जायेगी।

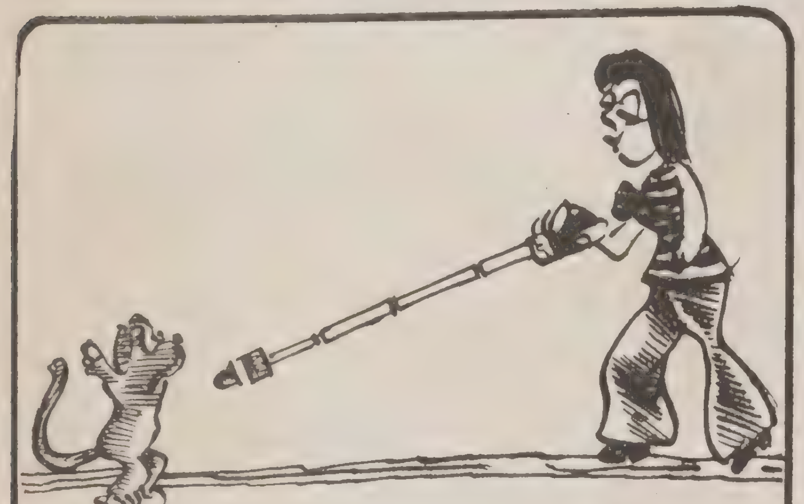
एरियल नामा



ट्रांजिस्टरों के एरियल तो आपने देखे ही होंगे। खींचों तो निकल पड़ता है, दबा दोतो दब जाता है लेकिन यह टेक्नालॉजी केवल एरियलों तक ही सीमित रखी गयी है। इस तकनीक का दूसरे क्षेत्रों में भी प्रयोग कर आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं उदाहरणतया—



पैन का सिरा यदि एरियल नुमा हो तो लिखने-लिखाने और खुजाने का साधन बन सकता है।



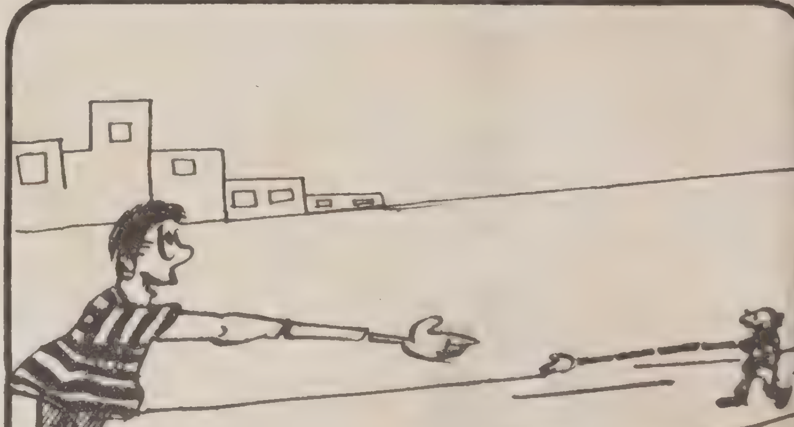
लिपस्टिक का सिरा भी एरियल नुमा हो तो उससे कई काम लिए जा सकते हैं। दीवार पर ऊंचाई पर नारी आन्दोलन के नारे लिखे जा सकते हैं। आत्म रक्षा के लिये छड़ी का काम लिया जा सकता है कुत्ते को डराया जा सकता है।



नाक एरियल नुमा हो तो उसे खींच कर पतीले में पक रहे पकवान को आसानी से सूंघा जा सकता है। पूरा मुंह पतीले के ऊपर ले जाकर गर्म भाप से मुंह झुलसाने का कष्ट नहीं रहेगा।



झण्डे का पोल भी एरियल नुमा हो तो 'झण्डा फहराने के लिए रस्सी खींचने की जरूरत नहीं रहेगी, बस पोल को खींच कर ऐरियल की तरह चढ़ाना होगा। हां, इसके लिए नेता का पहलवान होना जरूरी होगा। इसी बहाने नेता लोग कसरत कर लिया करेंगे।



हाथ में ऐरियली गुण हों तो दूर से ही हाथ मिलाया जा सकेगा, नजदीक तक आने की इंतजारी नहीं करनी पड़ेगी। यह भी पता लगेगा कि कितनी गर्म जोशी से हाथ मिलाया जा रहा है।



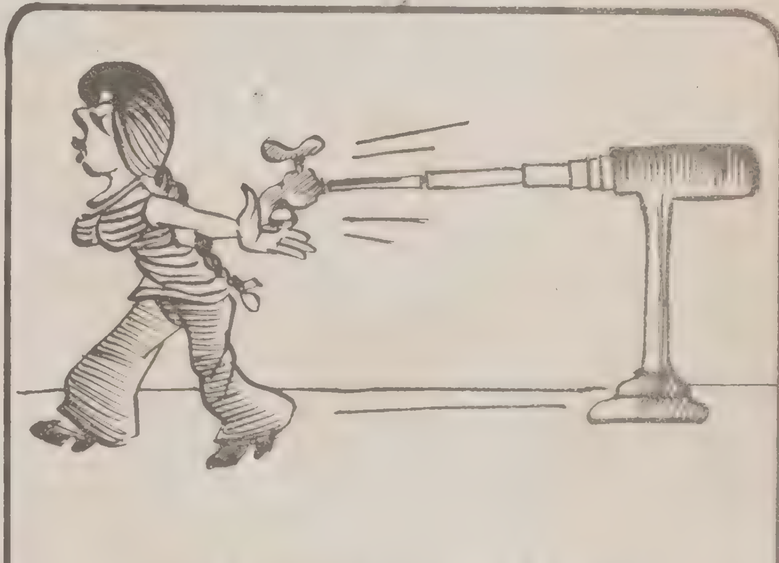
फोर्क एरियल नुमा हो तो रेस्टोरेन्टों में दूसरों की प्लेटों से मनपसन्द आईटम उठाये जा सकते हैं।



चाक़ भी एरियल नुमा हो तो नीचे से ही फल काट कर गिराये जा सकते हैं।



सिगरेट का फिल्टर एरियल नुमा हो तो तम्बाकु का आखिरी भाग तक सुटकाया जा सकता है।



नल भी एरियल नुमा हो तो पानी ले जाने के लिए बाल्टी लेकर नहीं आना पड़ेगा। आप नल को ही खींच कर अपने घर तक ले जा सकते हैं।



पंडित जी की चोटी भी एरियल नुमा हो तो भूत,भविष्य तथा पिछले जन्म की बातें जानने में शार्ट वेव की तरह प्रभावशाली होगा।



बेलन भी एरियल नुमा हो तो दरवाजे पर संतरी की तरह खड़े होकर देर से आने वाले पति का इन्तजार किया जा सकता है।

ताएक्वोन्डो

यह है ताएक्वोन्डो का एक और रोमांचकारी भाग जिमि जगतियानी द्वारा जिनके कई स्कूल देश के कई भागों में हैं तथा जिन्हें स्वयं ब्रूसली से शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त है।



T.

इग्रोटिज्योरिग्रो मावकी

क्रास किये हुए हाथों से निचले और सामने के प्रहार से बचाव !

चुंग-बाई-सिओगी मुद्रा में खडे होकर अपनी बायीं टांग आगे बढ़ाओ, साथ-साथ अपने दोनों हाथ ऊपर उठाओ। हाथों को कमर से शुरू कर विद्रोही के आंखों की ऊंचाई तक उठाकर कोहनी कस कर मोड़ लो। जबकि एक हाथ सुरक्षा की स्थिति में आ जाता है दूसरा ऊपर रहता है। जब यह माथे के करीब आता है तो हाथ घुम कर, हाथ का पिछला हिस्सा माथे के सामने हो जाता है। पहले व्यक्ति के तेजी से घूम जाने से विद्रोही के लाठी, रौड या लात के प्रहार से बचा जा सकता है।



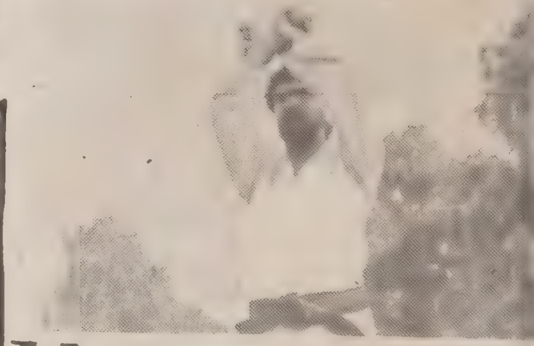
T.-1



T.-2



T.



T.-3

हंसना मना है

अफसर—मेरी सीटी सुनने के बाद भी तुम आगे क्यों चलती गई?

मोटर चालक—क्षमा करना अक्सर मुझे सुनाई काफी कम देता है।

अफसर—ठीक है, श्रीमती जी, कल सुबह आपकी सुनाई होगी।

●

एक छोटे शहर के डाक्टर सारा दिन काम करने के बाद थके मांदे घर पहुंचे और जैसे ही वे आराम करने के लिये बिस्तर पर लेटे, पास रखे टेलीफोन की घंटी जोर से बज उठी। डाक्टर साहब ने पत्नी को हिलाते हुए कहा, 'सुनो प्रिय, देखो कौन है और कहना तुम्हें मेरे शीघ्र ही वापिस आने की आशा है या और कुछ जो तुम्हारी समझ में आये, कह देना।'

पत्नी ने फोन सुन कर बोला, 'डाक्टर साहब घर पर नहीं है।' 'अच्छा, मैं मनीषा बोल रही हूं, मेरी छाती में दर्द है डाक्टर साहब के आते ही मेरी बात कर दीजिये।'

डाक्टर साहब ने पत्नी को कुछ हिदायतें दी, जो पत्नी ने टेलीफोन में दोहराई और बोली, 'आशा है आपको इससे आराम मिलेगा।

'धन्यवाद, स्त्री फोन में बोली, 'परन्तु मुझे यह बता दीजिये कि जो पुरुष आपके साथ हैं वह डाक्टरी हिदायतें देने के काबिल हैं भी या नहीं।'

जिमि—'अरे, तुम तो लड़ने से डरते हो।'

जानी—'नहीं, मैं डरता नहीं, पर अगर मैं लड़ा, तो मेरी मां को पता चल जाएगा और वह मेरी पिटाई करेगी।'

जिमि—'उन्हें कैसे पता चलेगा?'

जानी—'वो डाक्टर को तुम्हारे घर जाते देख लेगी।'

●


TECHNICAL BOOKS STORE
मुझे फ्लाइंग के बारे में सब कुछ बताने वाली कोई पुस्तक चाहिए।
अहा ! तो इस पुस्तक में फ्लाइंग के बेसिक प्रिंसिपल्ज यानि मूलभूत सिद्धान्तों के बारे में सब कुछ बताया गया है। पढ़ कर देखते हैं कितनी कारगर है यह पुस्तक।
सुपर मार्केट
ऐसी पुस्तक तो एकान्त में खुले आसमान के नीचे एकाग्र चित्त पढ़नी चाहिए तभी भेजे में कुछ घुसता है।
सचमुच यह पुस्तक तो बहुत ज्ञानवर्द्धक साबित हुई।
इसकी सहायता से मैं उड़ने भी लग गया।


पौराणिक कथा
ब्रूस ली
by SHARMAN DIVONO and FRAN MATERA
जीत कूने दो का तरीका
ब्रूसली उंगलियों के मसल मजबूत करने के लिए खास उंगलियों के वजन प्रयोग करता था।
अगले दिन 'मौत के पंजे' की शूटिंग के लिए ह्वे नहीं पहुंचता। इससे पहले कि ब्रूसली पता लगाता। उसे फिल्म को आर्थिक सहायता देने वालों मिलने जाना पड़ता हैं। अंतर्राष्ट्रीय व्यापारियों का एक ग्रुप जो अपने को वर्ल्ड ट्रेड एसोसियेट्स के नाम से बुलाते हैं। पर ब्रूसली को इनमें डोन पार्क भी दिखता है जिससे फेड ह्वे के घर वह लड़ा था।
'पार्कस' लगता है हम हमेशा ऐसे ही मिलते हैं।
मैंने तुमसे कहा ही था फेड के झगड़ों में न पड़ो।
मि० ह्वे के घर में तुम्हारे पहुंचने का हमें ख्याल हो नहीं था।
हमारे मि० पार्कस के लिये स्थिति सम्भालने का सिर्फ एक ही तरीका था।
मेरे साथी मि. फूजीवारा और रोडरी गेज ठीक कहते हैं।
पर अब जब तुम इसमें पड़ ही गये हो तो हमारा एक बिजनेस का काम कर सकते हो।
'सर मालकम' मैं कुछ नहीं करूंगा।
अभी तो तुमने काम सुना भी नहीं।
CLICK
मैं काफी सुन चुका।
क्या.....
और मैं रिवाल्वर की नली देख-देख कर तंग आ चुका हूं।

आगामी अंक में पढ़िये



अपनी ...
आज ही
एजेन्ट से
करा लीजि...

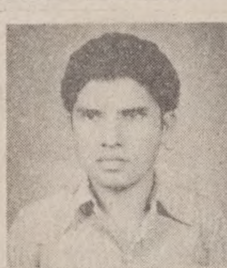
* चिपकी आन्दोलन
* दीवाने बुत—प्राइवेट शहीदों के
* सच्चा नाम
* सिलबिल-पिलपिल की छुट्टी-भाग-२
* सभी स्थाई स्त...
* दीवाना कार्ड



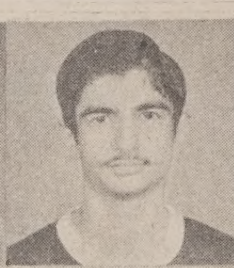
रूप कुमार बनवाना, तारा मार्केट, हापुड़, 20 वर्ष, दीवाना पढ़ना, घूमना।



त्रिगुण सेन गुप्ता, पुत्र श्री छेदी लाल सर्राफ, चौरी-चौरा, गोरखपुर, 15 वर्ष, पढ़ना।



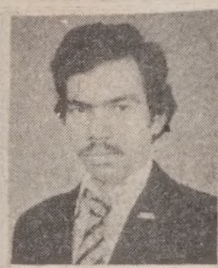
संजय सारस्वत, 101, गोविन्द नगर पूर्व, आमेर रोड, जयपुर, 21 वर्ष, पत्र-मित्रता।



शौकीन फरीदाबादी, म. नं. 1 क/68, फरीदाबाद टाऊन, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



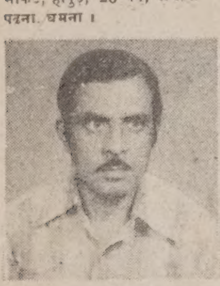
राजकुमार, 4513, आर्या पुरा, सब्जी मण्डी, दिल्ली, 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना।



रमेश कुमार एम. जोशी, द्वारा मोहनसिंह चौधरी, नेहरू नगर, बाड़मेर, 21 वर्ष, मित्रता।



प्रवीन ...
सिरसा ...
एवं गी...



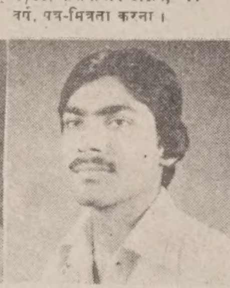
देशबन्धु, सी. 4 जी. म. नं. 142 बी जनकपुरी नई दिल्ली, 30 वर्ष, समाज सेवा।



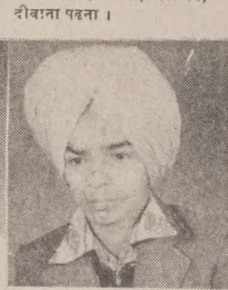
राजपाल वालुजा, 27, सुभाष नगर, नई दिल्ली, 21 वर्ष, दीवाना पढ़ना।



भारत भूषण मल्होत्रा, अशोक ब्यूटी सैन्टर, लुधियाना, 20 वर्ष कराटे।



मुकेश कुमार गुप्ता, एल-126ए लक्ष्मी नगर, दिल्ली-92, 19 वर्ष, पेंटिंग करना।



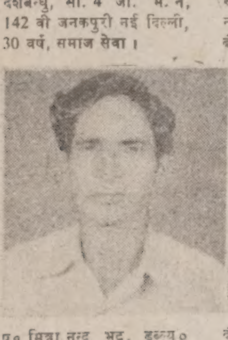
दर्शन सिंह, म. नं. 2680 रिक रोड, लुधियाना, 17 वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



सुशील कुमार, सी. बी. आर. आई. सी-29, शांति नगर, 17 वर्ष, पत्र मित्रता करना।



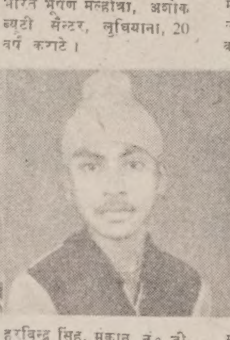
राम ...
काठमां...
करना



प० मित्रा नन्द भट्ट, डब्ल्यू० जैड. 105 प्रताप नगर, दिल्ली, 40 वर्ष, ईश्वर भक्ति पूजा।



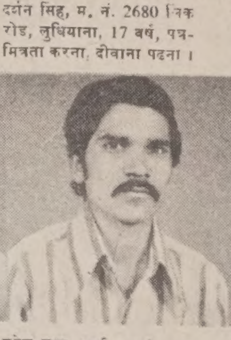
दीपक कुमार सिन्हा, सिविल सर्जन आफिस, गोपाल गंज, बिहार, 12 वर्ष, पढ़ना।



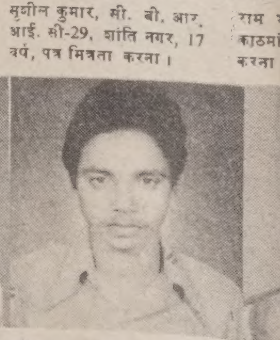
हरविन्द्र सिंह, मकान नं० जी-493, मो. मीर सदान, 17 वर्ष पढ़ना, फिल्में देखना।



मदन मांकड, बाड़मेर (राज.) 18 वर्ष क्रिकेट, पत्र मित्रता, फोटोग्राफी करना।



महेश चन्द वर्मा, वर्मा न्यूज एजेन्सी, रामपुर, 19 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



अशोक कुमार सिंह, गोपाल गंज बिहार, 14 वर्ष, समाज सेवा और पढ़ना।

रमेश ...
बाजार ...
मित्रता ...

आगे क्य...
मोटर
सुनाई काफी
अफसर—
आपकी सुनाई है...

एक छोटे शह...
करने के बाद थके...
वे आराम करने के...
रखे टेलीफोन की



...हदीन, जे. जे. अस्प...ल, बम्बई, 15 वर्ष, ...ना, घूमना।



दिनेश कुमार अग्रवाल, आनन्द म्युजिक सेन्टर, रायपुर, 17 वर्ष, संगीत सुनना।



एस. के. साहू, भिलौनी गंज, छोटा फुवारा, जबलपुर, 17 वर्ष, दीवाना पढ़ना।



सुरेश मिश्रा, सी-6, पी. एण्ड टी. कालोनी, जयपुर, 16 वर्ष, पत्र मित्रता व चित्रकला।



राज भाइ शाक्य, 135 वडा न. 4 फिर्तीपुर, खासी बाजार नेपाल, 20 वर्ष, गीत गाना, खेलना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, ...
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में ...

नाम ——————

पता ——————

——————

आयु ———— शौक

— — — — —

...ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

R.N. 16596/65 Regd. No. D-(C)1020/82